राष्ट्र उत्थान की कुञ्जी

या

स्वर्ग की सीढ़ी

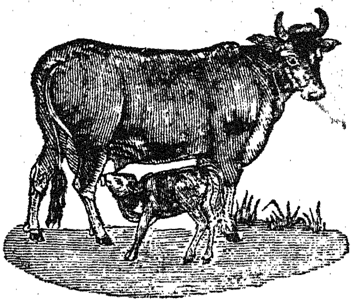

१—भारत की सुख समृद्धि गौ और उसकी संतान की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है। —महात्मा गांधी

२—कोई जाति बिना गऊ पालन समृद्धिशाली नहीं बन सकती। —सम्पादक "फिजीकल कलचर" अमेरिका

डाक्टर अग्निहोत्री

भूतपूर्व मेडिकल आफीसर टी. बी. सेनेटोरीयम।

गोपाल आर्ट प्रेस, बरेली।

राष्ट्र उत्थान की कुंजी

अथवा

स्वर्ग की सीढ़ी

गऊ सेवा मंडल का दूसरा पुष्प

लेखक :—

यज्ञ चिकित्सा, आरोग्य शास्त्र, आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा,
संकट मोचन इत्यादि पुस्तकों के लेखक;
सरकार से कई बार पुरस्कार प्राप्त

श्री डा० फुन्दनलाल अग्निहोत्री

एम. डी. डी. एस,
ई. एम. आर. ए. एस. (लन्डन)

[विशेषज्ञ क्षय व बवासीर चिकित्सा]

भूतपूर्व मेडिकल आफीसर टी. बी. सेनेटोरीयम, जबलपुर।

प्रेमनगर भूड़, बरेली।

सर्वाधिकार सुरक्षित हैं

प्रकाशक :—

स्वास्थ्य भण्डार, प्रेमनगर भूड़, बरेली।

मूल्य ।।) आने

प्रथमबार १०००

इस पुस्तक का प्रचार करना हर देश-भक्त तथा गऊ-भक्त का कर्तव्य है।

विषय सूची सप्त मण्डल

मण्डल	विषय	पृष्ठ
मण्डल १—	ईश्वर प्रार्थना	
	वैदिक राष्ट्र के ११ स्तम्भ	१ से ७ तक
२—	गोधन की उपयोगिता	
	वेद-शास्त्र तथा प्राचीन व आधुनिक विद्वानों के मत से	७ से १६ तक
३—	गौ से धन व स्वास्थ्य कैसे बढ़ता है	
	प्रत्यक्ष प्रमाण सहित	१७ से ३६ तक
४—	गौ द्वारा रोगों की चिकित्सा	
	अनुभूत प्रयोग	३६ से ५१ तक
५—	देश में गऊ की अवस्था	
	इतिहास और पशु-गणना के आधार पर	५१ से ५५ तक
६—	गऊ रक्षा का प्रश्न पूर्ण राष्ट्रीय है	
	सब मत के आचार्य इसके पक्ष में हैं	५५ से ६० तक
७—	रामराज्य और हमारी सरकार	
	रामायण और भारत सरकार के मंत्री के आधार पर	६० से ६५ तक
परिशिष्ट १—	गोचर भूमि, जनता का कर्तव्य। गाय के दूध बढ़ाने के उपाय	६५ से ७० तक

॥ ॐ ॥

मण्डल १

ईश्वर प्रार्थना; वैदिक राष्ट्र के ११ स्तम्भ

आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्म वर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽ
इषव्योऽति व्याधी महारथो जायताम् । दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः
सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्टासभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जाय-
ताम् निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नओषधयः
पच्यन्ताम् । योग क्षेमो न कल्पताम् । यजुर्वेद २२ । २२

मंत्र का अर्थ कविता में

हे[१] भगवन

ब्राह्मण[२] सुराष्ट्र में हो । द्विज ब्रह्म तेजधारी ॥
क्षत्री[३] महारथी हों । अरिदल विनाशकारी ॥
होंवे दुधारु गौवें[४] । पशु अश्व[५] आशुवाही[६] ॥
आधार राष्ट्र की हों । नारी[७] सुभग सदा ही ॥
बलवान सभ्य योधा । यजमान[८] पुत्र होवें ॥
इच्छानुसार[९] वर्षें । पर्जन्य ताप धोवें ॥
फल फूल से लदी हों । औषध[१०] अमोघ सारी ॥
हो योग[११] क्षेमकारी । स्वाधीनता हमारी ॥

अर्थ—हे परमात्मन् हमारे देश में वेद और परमेश्वर के ज्ञाता तेजस्वी सच्चे उच्चकोटि के ब्राह्मण उत्पन्न हों तथा शूरवीर अस्त्र विद्या में निपुण दुष्टों को अतिवेग से दबाने वाले महारथी वीर राज पुत्र क्षत्रिय हों। बहुत दूध देने वाली गौओं से देश भरा पुरा हो। भार उठाने में समर्थ हृष्ट पुष्ट बैल उत्पन्न हों और शीघ्र चलने वाले घोड़े (अथवा यान) हों। व्यवहार कुशल पुत्र उत्पन्न करने वाली स्त्रियां उत्पन्न हों। इस यजमान के राष्ट्र में वीर, युवा, सभा कार्य में चतुर रथी विजयता पुत्र हो। अपेक्षित समय पर हमारे लिये बादल वर्षा करते रहें। हमारे अन्नादि औषधियां फलवाली होकर पकें। जो धनादि हमें पहले अप्राप्त थे वह प्राप्त होते रहें और जो प्राप्त हैं उनका संरक्षणहोता रहे अर्थात् हमारा योग क्षेम हो।

यह वेद मंत्र हमें उपदेश करता है कि ऐ संसार के लोगों यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा देश खूब उन्नत हो और तुम संसार में खूब अभ्युदय प्राप्त करके अंत समय में अपने जीवनोद्देश्य मोक्ष को प्राप्त करो तो वेद मंत्र में बताई दस वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये भगवान से प्रार्थना करो। वैदिक प्रार्थना का आशय यह होता है कि मनुष्य जो चीज़ भगवान से मांगे उसे प्राप्त करने के लिये अपनी उन सबही शक्तियों को काम में लावे जो भगवान ने उसे प्रदान की हुई हैं और ईश्वर से प्रार्थना भी करता रहे। न तो नास्तिक को सफलता मिलती है, न पुरुषार्थ हीन आलसी को, जो किसी चीज के लिये भगवान से प्रार्थना तो करता है पर भगवान ने उसे जो शक्तियां बुद्धि, बल, हाथ, पैर ज्ञान इत्यादि प्रदान की है उनसे काम नहीं लेता। तब ईश्वर भी यह समझकर कि जब यह अपने प्राप्त साधनों को काम में नहीं लाता तो और अधिक साधन देना व्यर्थ है उसकी सहायता नहीं करता। पर

जो प्रभु के प्रदान किये समस्त साधनों को प्रयोग में लाकर किसी उचित और शुभ काम के लिये अधिकारी बनकर सच्चे हृदय से ईश्वर से प्रार्थना करता है उसकी प्रार्थना अवश्य स्वीकार होती है। क्योंकि वह हमारा न्यायकारी पिता और दयालु माता भी है। जिस प्रकार छोटा बालक जब माता का दूध पीना चाहता है और अपनी शक्ति भर घुटनों चलकर माता के पास उस के चरणों तक पहुँच जाता है और फिर माता की ओर तृषित नेत्रों से देखता है (वाणी की शक्ति भी नहीं जो मुंह से कह सके) तब माता का प्रेम उमड़ आता है और वह उसे प्रेम से उठा कर दूध पिलाने लगती है। उसी प्रकार भगवान उस व्यक्ति को जो अपनी शक्ति भर पुरुषार्थ करते हुये प्रार्थना करता है अवश्य सफलता प्रदान करते हैं। नास्तिक और ईश्वर से प्रार्थना न करने वाले को इस कारण पूर्ण सफलता नहीं मिलती कि प्रथम तो वह उचित, अनुचित, शुभ और अशुभ कार्य का विवेक ही नही कर सकता क्योंकि उस के सामने न कोई ईश्वरीय विधान है न किसी का भय है। विषयों में फंसी बुद्धि जिधर ले जाती है चल देता है। आस्तिक जब कोई पाप कर्म रिशवत, चोरी इत्यादि करने पर उतारू हो तो ईश्वर की विद्यमानता, उसके न्याय से पाप कर्म का फल दुख याद करके रुक सकता है। पर नास्तिक समाज से छिप कर तो सभी काम कर सकता है। शक्ति के अभिमान में समाज की भी परवाह नहीं करता अतः अपने दुष्कर्म से जहां दूसरों को दुखी करता है वहां अंत को स्वयं भी दुखी होता है। दूसरे ईश्वर प्रार्थना से निरभिमानता आती है। अतः ईश्वर भक्त सब के साथ नम्रता का व्यवहार करता है जिससे संसार में सुख और शान्ति की वृद्धि होती है जबकि नास्तिक अथवा ईश्वर की प्रार्थना उपासना न करने वाला अपनी घमंड भरी बात चीत से सब ही को कष्ट करके संसार में अशान्ति फैलाता है। आज जो संसार

में और विशेष रूप से हमारे देश में भ्रष्टाचार और रिशवतखोरी का बाजार गरम है उसके दो ही मुख्य कारण हैं। प्रथम ईश्वरदत्त ज्ञान वेद का प्रचार न रहने से ईश्वर का उसके वास्तविक रूप में न मानने से चरित्र हीनता; दूसरे जिस भोजन से मनुष्य के विचार अथवा मन बनता है उसकी अशुद्धता। नास्तिक तो मर्यादा और भय रहित होने से पाप करता है, और वेद ज्ञान रहित सम्प्रदाई लोग कोई ईश्वर को किसी विशेष स्थान पर मनुष्य की भांति देहधारी मानते हैं और कोई इस भ्रम में हैं कि पाप करके अपने रसूल पर ईमान लाने से पापों को क्षमा करा लेवेंगे। कोई कहते हैं :—

रात को खूब पी मय सुबह को तोबा करली।
रिंद के रिंद रहे हाथ से जिन्नत न गई।

इस कारण यह सब ही ईश्वर को उसके वास्तविक रूप में न मानने के कारण अर्ध नास्तिक होने से पाप कर सकते हैं। अतः चरित्र निर्माण के लिये मुख्य चीज़ ईश्वर विश्वास और उस की वास्तविक पूजा है। इसी कारण इस वेद मंत्र में "आ ब्रह्मन्" महान प्रभु कह कर ईश्वर से प्रार्थना की गई है। फिर वह दस पदार्थ मांगे गये हैं जिनसे राष्ट्र पूर्ण रूप से सुखदाई और आदर्श बन सकता है। उन दसों पदार्थों की उपयोगिता पर प्रकाश डालना इस छोटी पुस्तक में सम्भव नहीं। उन ही दस में एक विशेष पदार्थ गऊ है जो इस समय हमारे राष्ट्र उत्थान की कुंजी है क्योंकि उस एक के बिना हम कोई पदार्थ यहां तक कि ग्यारहवां ईश्वर प्रेम को भी प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि ईश्वर बिश्वास और उसका प्रेम शुद्ध पवित्र मेधावी बुद्धि का विषय है जो बिना गोदुग्ध के भोजन के प्राप्त नहीं हो सकती। इसी प्रकार तपस्वी, त्यागी और विद्वान ब्राह्मण, वीर और बुद्धिमान क्षत्रिय, बिना गोदुग्ध के भोजन के नहीं बन

सकते। बहुत दूध देने वाली स्वयं गाय भी बछिया को अधिक दूध पिलाने से ही बनाया जा सकता है। शक्तिशाली बैल और तीव्र गामी घोड़े भी गाय के दूध घी से ही तैय्यार किए जा सकते हैं। और इन वस्तुओं को गर्भ काल में माता को और बाल्य काल से बालक को खिला पिला कर उस के मस्तिष्क को ऐसा बनाया जा सकता है कि मोटर, रेल और वायुयान सदृश तेज चलने वाले ऐसे यानों का अविष्कार कर सके जो तेजी में तो इनके सदृश हों पर दुर्गन्ध फैलाकर और धूल उड़ाकर जनता को दुख पहुँचाने तथा सवार की आंख, कान को हानि पहुँचाने का दुर्गुण न रखते हों।

ऋग्वेद में भगवान ने आदेश दिया है "जिस के घर में उत्तम दूध देने वाली गाय होती है वह अपनी शारीरिक मानसिक और आत्मिक शक्ति बढ़ाता है। जैसे वैज्ञानिक जल से बिजली उत्पन्न करके अनेकों अविष्कार करता है वैसे गोदुग्ध पीने वाले की बुद्धि तीव्र होकर नवीन २ आविष्कार करती है। (देखो ऋग् ५-२५-७)

इस वेद मंत्र की सत्यता का प्रत्यक्ष प्रमाण स्वयं इन आंखों ने देखा है। कोई सन् १६१८ या उसके निकट की बात है शिवगढ़ राज्य के राजा साहब के पास एक बढ़ई बिना पैट्रोल से चलने वाला काष्ठ का बना मोटर लाया था जो एक घन्टे में १०-१२ मील तो उसी समय चलता था और उसका कहना यह था कि यदि इसमें और अधिक मूल्य के पुर्जे लगाए जावें तो इसकी चाल २५-३० मील की हो सकती है। जिसके लिए वह चाहता था कि कोई धनवान आविष्कार पूर्ण करने को दस सहस्र और कारखाना खोलने को पचास सहस्र रुपया लगा देवे तो इससे पर्याप्त धन कमाया जा सकता है। पर विचारे की किसी ने न सुनी। वह बढ़ई यज्ञोपवीतधारी अपने को ब्राह्मण मानने वाला निरामिष भोजी और गोदुग्ध का विशेष

भोजन करनेवाला था। विज्ञान भी यही बताता है कि ऐसा मस्तिष्क गोदुग्ध के भोजन से ही बनता है जो जनता को हानि न पहुँचाने वाले ही यंत्र बनावे। आगे प्रारम्भ के वेद मंत्र में व्यवहार कुशल और वीर पुत्र उत्पन्न करने वाली स्त्रियों की प्रार्थना है ऐसी देवियां इस देश में उसी समय अधिकता से होती थी जब यहां गोदुग्ध की नदियां बहती थीं। महाराणी कौशल्या, कैकेयी, सुमित्रा, कुन्ती, द्रौपदी मंदालसा इत्यादि के चरित्रों से प्राचीन इतिहास भरा पड़ा है। पिछले निकट समय के इतिहास में भी ऐसी स्त्रियों की कमी नहीं है। पर जब गोदुग्ध के साथ २ भोजन में बकरे इत्यादि के मांस का भी प्रचार हो गया तब क्षत्रिय वीर तो रहे पर मूर्ख और विलासी भी बन गए। उसी का परिणाम हम आज तक भोग रहे हैं और उस समय तक भोगते रहेंगे जब तक देश में गोदुग्ध की अधिकता नही हो जाती। जब स्त्रियों का भोजन मांस रहित गोदुग्ध होगा और गर्भ काल में हर मास की उपयुक्त औषधि मिश्रित गोदुग्ध मिलेगा तथा गोघृत से हवन यज्ञ होवेंगे तब अवश्य ही मन चाहे मेधावी और महारथी बालक उत्पन्न होवेंगे। ऐसा आयुर्वेद और वेद दोनों का ही मत है। परीक्षण इस की साक्षी देते हैं। यह बात तो नवीन विज्ञान से भी सिद्ध हो चुकी है कि दूध पिलाने के दिनों में यदि माता मांस खाती है तो उसके दूध में सब विटामिन नष्ट हो जाते है। साथ ही गर्भ काल और प्रसूता स्त्री के भोजन में गोदुग्ध की अनिवार्यता को भी वर्तमान वैज्ञानिक स्वीकार करते हैं। आगे वेद मंत्र में अपेक्षित समय पर वर्षा की प्रार्थना के साथ गऊ का सम्बन्ध कदाचित बहुत से सज्जनों की समझ में न आवे पर यह हमारी बहुत ही प्राचीन विद्या है जो आज कल के वैज्ञानिक परीक्षणों से भी सत्यसिद्ध हो चुकी है। इस प्रकार का वायु मंडल केवल यज्ञों से बनाया जा सकता है। और यज्ञ द्वारा समय पर वर्षा कराई जा सकती है पर ऐसे फलदायक यज्ञों के लिए गोघृत अनिवार्य है।

साथ ही गोबर की खाद से जंगलों और वृक्षों की संख्या बढ़ाई जा सकती है जिन का प्रभाव भी वर्षा पर पड़ता है। इसी प्रकार यज्ञों के प्रभाव से अन्न, फल और औषधियां खूब फल वाली बना कर पकाई जा सकती हैं।

उपरोक्त गुणवान नागरिकों से जब देश भरा पुरा होगा तब अवश्य ही हमारा योग क्षेम होगा इसमें शंका ही क्या हो सकती है।

ऐसा आदर्श और सुन्दर राष्ट्र निर्माण के लिए इस समय सब से अधिक आवश्यकता देश में गोवृद्धि की है। यह मैं ही नहीं कहता किन्तु आदि सृष्टि वेदकाल से लेकर आधुनिक काल तक के सब विद्वान गाय की उपयोगिता को स्वीकार करते हुए राष्ट्र उत्थान के लिए आवश्यक ही नहीं अनिवार्य बताते हैं जिस के प्रमाण अगले पृष्ठों में उपस्थित किए जावेंगे।

मण्डल २

गोधन की उपयोगिता

(वेद शास्त्र तथा प्राचीन व आधुनिक विद्वानों के मत से)

वेद संसार के पुस्तकालय में सब से पुरानी पुस्तक है इसे सब ही विद्वान एक मत से स्वीकार करते हैं। हम आर्य लोग उसे ईश्वरीय ज्ञान भी मानते हैं क्योंकि उसमें किसी सम्प्रदाय का समर्थन नहीं किया गया है किन्तु सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ के ज्ञान के साथ साथ मनुष्य के वह कर्तव्य बताए गए हैं जिनका पालन करने से वह संसार में सुख और शान्ति को प्राप्त करता हुआ अंत में परमानंद अथवा भगवान को प्राप्त कर सके। अतः सबसे पहले हम गाय सम्बन्धी कुछ वेद मंत्रों का अर्थ यहां उपस्थित करते हैं:—

पहला मन्त्र

गौरुद्रों की माता, वसुओं की पुत्री और तेजस्वी लोगों की बहिन है। गौधन धान्य को पूर्ण करने वाली है और अमृत का केन्द्र है। विवेकी पुरुष से मैं कहता हूँ कि ऐसी निरापराधिनी तथा न मारने योग्य गऊ को कभी मत मारो (ऋग्वेद ८-१०१-१५)

रूद्र कहते हैं दुष्टों को रूलाने वाले को अर्थात पापियों को दण्ड देने की शक्ति रखने वाला। यहां रूद्रों की माता कहने से यही अभिप्राय है कि जो मनुष्य रूद्र बनना चाहता है वह गोदुग्ध का खूब सेवन करे अर्थात गऊ उसका माता के समान पालन करती है। उसे भी गऊ की रक्षा और पूजा माता के समान ही करनी चाहिए। गऊ से धन धान्य कैसे प्राप्त होता है और गोदुग्ध को वेद भगवान ने अमृत क्यों बताया यह युक्ति प्रमाण से आगे सिद्ध किया जावेगा।

दूसरा मन्त्र

गऊ कृश अर्थात निर्बल दुबले पतले मनुष्य को हृष्ट पुष्ट करती है और कुरूप को सुन्दर बनाती है। गऊ अपने मंगलमय शब्दों से हमारे गृह को मंगलमय करती है। इसी कारण सभाओं में उसका यश गान होता है (ऋग् ८-१०१-१६)

तीसरा मन्त्र

गौओ तुम बहुत से बच्चे जनो। चरने को तुम्हें बहुत से सुन्दर चारे प्राप्त हों तथा सुन्दर जलाशयों से स्वच्छ जल पीओ, तुम्हें दुष्ट जन जीव न सता सकें। रूद्रों का शस्त्र तुम्हारी बराबर रक्षा करता रहे। (ऋग् ८-१०१-१७)

गऊ की उपयोगिता ऊपर के २ मंत्रों में बताने के पश्चात वेद भगवान ने इस तीसरे मंत्र में मनुष्यों को आदेश दिया है कि तुम

गऊ की ऐसी सेवा करो कि वह स्वस्थ और दीर्घजीवी होकर बहुत से बच्चे जने। उसके साधन यह है कि उनके चरने को अच्छी घास उत्पन्न करने वाले सुन्दर चरागाह छोड़ो और स्वच्छ जल पिलाने का प्रबन्ध करो तथा रूद्र रूप आर्य लोग गौ-घातक प्राणियों से उनकी रक्षा शस्त्रों से भी करते रहें।

वेद के पश्चात जितने भी आर्ष ग्रन्थ वेद के आधार पर बने हैं उन में से एक भी ऐसा नहीं है जिसने गऊ हत्या को महान पाप न माना हो। आज बहुत से मन गढंत इतिहासों में जो हमें कहीं कहीं यह पढ़ने को मिल जाता है कि प्राचीन आर्य लोग गऊ का मांस खाते थे यह सब कपोल कल्पित है। अंग्रेजों की तो इसमें राजनैतिक चाल थी, और है और भारतीयों की मूर्खता तथा अंग्रेजों की मानसिक दासता का परिणाम है। प्राचीन समय में आर्य लोग रूद्र हुआ करते थे वह वेद विरुद्ध आचरण करने वाले को कड़ी ताड़ना करते थे। आज ऐसे पापी राक्षसों की सन्तान भी अनुचित द्वेष भाव से ऐसी झूठी बातों के प्रचार में सहायता कर सकती है। कुछ भी हो भारत का प्राचीन सच्चा इतिहास यही बताता है कि वैदिक काल में हमारे राष्ट्र में अरबों खरबों गाऐं थी और गऊ पूजा की वस्तु समझी जाती थी तब ही देश धन्य धान्य से ऐसा भरपूर था कि राम राज्य में एक श्रमिक को एक दिन के श्रम में एक सोने की मुद्रा दी जाती थी। उस समय देश में गाऐं कितनी थीं और उसकी उपयोगिता को भगवान राम कितना समझते थे इस का अनुमान इसी बात से हो सकता है कि भगवान राम ने दस सहस्र करोड़ अर्थात एक अरब गाऐं विद्वानों को दान की थी।

(देखो वाल्मीकि रामायण १-१-१४)

महा भारत शान्ति पर्व में भीष्म जी महाराज युधिष्ठिर से कहते हैं: –

हे भारत गौएं दूध, घी, गोबर, मूत्र, चर्म, हड्डी, बाल, सींग, गौ रोचन प्रभृति अपने सारे अंगों से राष्ट्र की सेवा करती हैं। प्रत्येक देश में गाएं लक्ष्मी का मूल कारण हैं। गौ में कोई भी दोष नहीं है यह गाय अपने स्तन में अमृत रखती है और उसे मनुष्यों को देती है। गाएं अपने तेज से और शरीर से अग्नि के समान हैं। गाएं बड़ी तेजस्वी वस्तु हैं तथा प्राणियों को सभी दशा में सुख ही पहुँचाती हैं इत्यादि। इसी प्रकार यक्ष के यह प्रश्न करने पर कि संसार में अमृत क्या है? युधिष्ठिर महाराज ने उत्तर "गोदुग्ध" दिया था। भगवान कृष्ण तो अपनी गऊ भक्ति के कारण गोपाल कहलाते ही हैं। अपनी उपयोगिता के कारण ही गऊ ब्राह्मण की रक्षा हमारे जीवन का अंग बन गई है। हम अपनी सत्यता को प्रमाणित करने को गाय की सौगन्ध खाते हैं और अनिवार्य रक्षा चाहने के लिए एक दीन मनुष्य शक्तिशाली से "मैं तुम्हारी गऊ हूँ" कह कर प्रार्थना करता है जिसका अर्थ यही है कि मैं तुम्हारे लिए परम उपयोगी होने से गऊ की भांति रक्षा का पात्र हूँ।

आधुनिक विद्वानों ने भी गऊ की उपयोगिता को खूब समझ लिया है। उनके विचार इस प्रकार हैः—

अमेरिका के सम्पादक "होदर्स डेरी मेन" कहते है—"गाय हमारे दुग्ध भवन की देवी है। वह भूखों को खिलाती है, नंगों को पहनाती है और बीमारों को अच्छा करती है उसकी ज्योति चिरन्तन है।"

२—सर विलियम वैडरवर्न:—

"मैं इसकी तो कल्पना कर सकता हूँ कि किसी राष्ट्र के बिना भी गौ हो सकती है किन्तु मैं यह स्वप्न में भी अनुमान नहीं कर सकता कि कोई राष्ट्र भी बिना गाय के हो सकता है।"

३—श्री वाल्टर ए० डामर, अमेरिका अपनी पुस्तक 'आवर डम एनिमल्स' में लिखते हैं :—

गाय के सौम्य रूप में सचमुच देवत्व भरा है। उस में एक महानता और भव्यता है, जो ग्राम देवता के उपयुक्त है। उसमें शत प्रति शत मातृत्व है और उसका मनुष्य जाति से यही माता का सम्बन्ध है।

४—सम्पादक फ़िज़ीकल कलचर अमेरिका—कोई जाति बिना गऊ पालन के समृद्धिशाली नहीं हो सकती। गाय *सबसे उत्तम भोजन* मनुष्य के लिए पैदा करती है। घास खाकर *अमृत पदार्थ* देती है। जहां गाय की अच्छी सेवा की जाती है वहां की भूमि उपजाऊ सभ्यता उच्च और जाति अधिक स्वस्थ और बलावन होती है। इसका दूध अमूल्य पदार्थ है। गोवर और मूत्र की खाद भूमि के लिए अकसीर है। इत्यादि।

५—डा० ए० मेक डोनर्स—भारतीय जीवन और विचार धारा का गाय इतना अधिक अंग बन गई है कि यदि उसके प्रभाव का आदि काल से पूर्ण वर्णन करें तो मानवी सभ्यता के इतिहास का एक मार्के का अध्याय बन जावेगा।

६—अमेरिका के डा० ई० वी० मैकालम कहते हैं :—जिन लोगों ने कुछ नाम कमाया है जो अत्यन्त बली और बीर हुए हैं जिनके समाज में बाल मृत्यु की संख्या बहुत घट गई है। जिन्होंने व्यापार धंधे पर अधिकार किया है जो साहित्य संगीत कला का आदर करते हैं तथा जो विज्ञान और मानव बुद्धि की प्रत्येक दिशा में प्रगतिमान हैं वे ऐसे लोग हैं जिन्होंने गाय के दूध और दूध के बने पदार्थों का स्वच्छन्दता से उपयोग किया है।

७—अमेरिका के भूतपूर्व गर्वनर मालकम तो गाय की उपयोगिता पर इतने मुग्ध हुए हैं कि प्रेम में मस्त होकर निम्नलिखित शब्दों में अपने उद्‌गार प्रगट करते हैं। "महाकवि "होमर" ने युद्ध; "वरजिल" ने आयुध "होरेस" ने प्रेम "दान्ते" ने नरक और मिल्टन ने स्वर्ग का गीत गाया परन्तु मुझ में यदि इन सिद्ध कवियों की सम्मिलित प्रतिभा होती और मेरे हाथ में हजार तारों का तान पूरा होता तथा सारा संसार श्रोता बन कर सुनता तो मैं अपना हृदय खोल कर गौ का गीत गाता, उसके गुण बखानता और उस की महिमा का गान यावच्चन्द्र दिवाकर अमर कर देता। यदि मैं मूर्ति कार होता और सङ्गमरमर पत्थर में टनकी से अपने विचार मूर्तिमान कर सकता तो संसार की पत्थर की सब खानें छान कर विमलतम, शुभ्रतम संगमरमर की पटियां ढूंढ लाता और चन्द्र ज्योत्सना से पूर्णांकित निरभ्रनील प्रकाश से मण्डित किसी मनोहर बन में निर्मल जल के समीप पक्षियों के मधुर गुञ्जार के बीच बैठ कर अपने प्रेम धर्म के पवित्र कर्म में लग जाता। उस शीतल शुभ्र संगमरमर का सारा खुदरा पन अपनी छेनी से छील कर उसे इतना कोमल बना लेता कि उसमें से मेरे मन की गौ की मूर्ति निकल आती। उसके विशाल करुणामय नेत्र होते वह अपने उभरे स्तनों में से भरा हुआ पुष्ट कर दूध पान कराने की प्रतीक्षा में खड़ी और प्रेम से उस अमृत के लेने वालों का सुख आरोग्य एवं बल का आशीर्वाद देती हुई देख पड़ती। गऊ बिना ताज की महारानी है। उसका राज्य समस्त समुद्र व समस्त पृथ्वी है। सेवा उसका विरद है। जो कुछ वह लेती है उसे चौगुना करके देती है। यदि आज संसार की सब गौएं मर जावें या ठंट हो जावें तो कल ही मानव-जाति पर भयानक सङ्कट आ पड़े। रेल की सड़कें, बैंक व कपास की फसल, इन सब के बिना हम लोग मजे में अपना काम चला सकते हैं पर गौ के बिना मानव

जाति रोग, क्षय, और अन्त में विनाश की प्राप्ति होगी। गौ का हम वह सन्मान करें जिस के वह योग्य है। मुझे आशा है कि ज्यों २ हम लोग ज्ञान के क्षेत्र में आगे बढ़ेंगे, क्रूरता और स्वार्थ परता छोड़ेंगे त्यों त्यों उनकी हत्या करना और उनका मांस खाना भी त्याग देंगे जो हमें बल देती सुख पहुँचाती और हमारे बच्चों के प्राण बचाती है।"

आधुनिक विदेशी विद्वानों और भारत के प्राचीन विद्वानों की भांति इस युग के भारतीय विद्वान और महान पुरुष भी गऊ के वैसे ही प्रशंसक हैं जिस की वह पात्र है।

(क) ऋषि दयानन्द जी महाराज ने जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रह कर अपना सारा जीवन ज्ञान प्राप्ति तथा सत्यासत्य का निर्णय कर सत्य के प्रचार में लगाया। वह तर्क की कसौटी पर कसे बिना किसी बात को नहीं मानते थे। उन्होंने गऊ की उपयोगिता पर विचार करके गऊ रक्षा के लिए बड़ा आन्दोलन किया और "गोकरुणानिधिः" पुस्तक में हिसाब लगा कर बताया है कि "एक गाय की एक पीढी में चार लाख दश हजार चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन एक बार के भोजन से होता है। आगे गाय की पीढी पर पीढ़ी का हिसाब लगा कर देखा जावे तो असंख्यात मनुष्यों का पालन हो सकता है। और उस गाय को मार कर खा जावें तब केवल ७०-८० मांसाहारी एक बार भोजन करके पेट भर सकते हैं" (देखो मांसाहारी कितनी बड़ी राष्ट्रीय हानि करते हैं। लेखक) इसी आधार पर ऋषि दयानन्द जी ने अपनी दूसरी पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है कि "गाय भैंस बकरी इत्यादि दूध देने वाले पशुओं को मारने वालों को सब मनुष्यों का मारने वाला समझना चाहिए।"

(ख) महामना मालवीय जी ने दिल्ली में कांग्रेस के सभा-

पति के स्थान से भाषण देते हुए कहा "मुझे ले लो यदि चाहो मेरे प्राण ले लो पर गाय को छोड़ दो" अर्थात वह गाय को अपने जीवन से भी अधिक उपयोगी समझते थे।

(ग) ठीक इसी प्रकार के शब्द श्री तिलक महाराज ने कहे हैं। "मुझे चाहें मार डालो पर गऊ पर हाथ न उठाओ" उनका विचार था कि स्वराज्य होते ही सब मे पहले गोवध निषेध की घोषणा की जावेगी।

(घ) डाक्टर कैलाश नाथ काटजू कहते है:—'गो सेवा का प्रश्न भारत वासियों के जीवन और उन्नति के लिए एक महत्व पूर्ण प्रश्न है।'

(ङ) पंजाब केसरी श्री लाजपत राय जी तथा प्रसिद्ध सन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी इत्यादि सब ही बुद्धिमान देश हितैषी गऊ की उपयोगिता को समझते हुए गऊ बध से दुखी थे और जनता को यही आशा दिलाते थे कि स्वराज्य प्राप्ति पर सब से पहिला काम गौ रक्षा और उसका वंश सुधार होगा। क्योंकि बिना इसके राष्ट्र उत्थान हो ही नहीं सकता। १० वर्ष के स्वराज्य में बिना गऊ रक्षा की उन्नति हम अपने आंखों देख रहे हैं।

(च) महात्मा गांधी राष्ट्र निर्माण के लिए गौ को स्वराज्य से भी अधिक महत्व देते थे। उन के ही शब्दों में पढ़े "मैं गौ रक्षा के प्रश्न को किसी प्रकार स्वराज्य से कम महत्व का नहीं समझता हूँ जब तक हमने गाय को बचाने का मार्ग नहीं पा लिया है तब तक स्वराज्य शब्द बिल्कुल अर्थ हीन है, क्योंकि यही कसौटी है जिस पर हिन्दुत्व की परीक्षा की जानी चाहिए और भारत में वास्तविक स्वराज्य होने के पूर्व सिद्ध की जानी चाहिए" (देखो यंग इंडिया

७-५-२५) और भी कहते है "मेरे नजदीक तो गऊ हत्या और मनुष्य हत्या दोनों एक ही चीज हैं" (देखो नव जीवन २९-१-२५) फिर एक स्थान पर तो उन्होंने यहां तक कहा है "जब तक गौ का वध होता है मुझे ऐसा लगता है कि मेरा वध होता है" ऐसे नेताओं को क्या कहा जाय जो उन को बापू कह कर उनकी समाधि पर फूल मालाएँ चढ़ाते है और उन के कथानुसार गौ वध करा के उन का वध कराते है। ऐसे नेता जरा शान्त होकर अपने इस घृणित कृत्य पर विचार करें और अपने इस कलंक को अपने जीवन काल में ही धो जावें तो अच्छा है अन्यथः इतिहास उनके इस कृत्य को कभी क्षमा न करेगा और गऊ वध अवश्य ही बंद होकर रहेगा। एक और स्थान पर महात्मा गान्धी ने लिखा है "किसी भी हिन्दू बालक से पूछो, वह तुम्हें कह देगा कि गौ रक्षा प्रत्येक हिन्दू का परम कर्तव्य है और जो इस में विश्वास नहीं रखता वह हिन्दू कहलाने योग्य नहीं है (देखो यंग इंडिया २९-१-२५) इसी प्रकार के भाव अन्य हिन्दुओं के हृदय में उठते हैं और उनके मुख द्वारा बाहर आते हैं पर इस का ठीक अर्थ और कारण न समझने के कारण कुछ अहिन्दू लोगों को यह भ्रम हो जाता है कि गौ रक्षा केवल हिन्दुओं की कोई साम्प्रदायिक चीज है। वास्तव में यह महान भूल है जो धर्म और सम्प्रदाय के ठीक २ अर्थ न समझने या गाय से प्राप्त होने वाले राष्ट्रीय लाभों पर ध्यान न देने के कारण हुआ करती है। ऐसे सज्जनों को मोटे तौर पर तो इतनी ही बात समझ लेना चाहिए कि अंग्रेज और अमरीकन हिन्दू नहीं हैं ईसाई हैं। बहुत से नास्तिक और धर्म विहीन होने का दम भरते हैं। फिर भी वह गाय के ऐसे ही भक्त हैं जैसे किसी समय आर्य लोग जिन्हे अब हिन्दू कहते हैं थे। यह क्यों? केवल इस लिए कि गऊ राष्ट्र को उठाने वाली है; न किसी विशेष सम्प्रदाय पर विशेष और किसी पर कम कृपा करने वाली। पाठक आगे इसी पुस्तक में गाय के गुणों का

वर्णन पढ़ेंगे। फिर इसे हिन्दुओं की विशेष वस्तु क्यों समझा जाता है? इसका कारण यह है कि हिन्दू कोई सम्प्रदाय नहीं किन्तु वैदिक धर्म का बिगड़ा रूप है जिस में समय २ पर सैकड़ों सम्प्रदाय बनते बिगड़ते रहते हैं। पर वैदिक धर्म के सत्य सिद्धान्त अटल रहते हैं। जिस प्रकार किसी रत्न जड़ित राज महल के बहुत दिनों तक बंद रहने से और कूड़ा करकट साफ न करने से रत्नों पर भी धूल मिट्टी छा जाती है इसी प्रकार इस समय हिन्दू धर्म है जो मूल सिद्धान्त के रूप में उन ही बहुमूल्य रत्नों का मालिक है जो गर्द झाड़ देने से अपनी वास्तविक चमक से संसार को दीप्यमान कर सकते हैं। इसके सब ही मूल सिद्धान्त जो वेद के अनुकूल हैं ईश्वर कृत होने से सार्वभौमिक हैं। उन ही में से एक गौ पूजा है जो गौ की उपयोगिता के कारण है। एक गाय ही क्या, गायत्री, यम, नियम, वर्ण, आश्रम, पंच यज्ञ, वेद, शास्त्र लोग भ्रम से केवल हिन्दुओं की चीज़ समझते हैं पर वह समस्त संसार को समान रूप से लाभ पहुँचाने वाले हैं और अपने गुणों के कारण आर्य अथवा हिन्दुओं को प्रिय लगते हैं। यहां इन सब विषयों पर लिखने को स्थान नहीं है यहां तो केवल गाय के राष्ट्र निर्माण करने वाले गुणों पर विचार करना है। अतः हम बताते हैं कि जिस धन की कमी के कारण आज हम गरीबी, भूख, निर्बलता, बीमारी, बेकारी, मूर्खता और भ्रष्टाचार का कष्ट उठा रहे हैं वह धन 'गोधन' ही है जिस के अभाव के परिणाम स्वरूप ही यह सब कष्ट हो रहे हैं। बिना गोधन की पूर्ति किए कागज के नोटों से धन बढ़ाने का यत्न करके दूध, घी के स्थान में मांस, मछली, अंडा, बनस्पति आइल इत्यादि अभक्ष्य पदार्थों से पेट भरा गया तो रोग, भ्रष्टाचार, मूर्खता, लड़ाई झगड़े और अशान्ति और भी बढ़ेगी और देश वास्तविक रूप में कभी धनवान न हो सकेगा। गऊ से धन व स्वास्थ्य कैसे बढ़ता है यह अगले मंडल में बताया जावेगा जो उपयोगिता का दूसरा अंग है।

मण्डल ३

गौ से धन व स्वास्थ्य कैसे बढ़ता है

प्रत्येक्ष प्रमाण सहित

हमारे पूर्वज गाय को ही धन कहते थे। किसी के धनवान होने का पैमाना उसके पास गौओं की संख्या थी न कि नोटों के बंडल और मोटर और मूल्यवान सूट क्योंकि धनका प्रथम उपयोग स्वास्थ्य प्रद भोजन है, जो नोटों से नहीं गऊ से प्राप्त होता है। दूध के रूप में भी और अन्न के रूप में भी। पिछले महा युद्ध के समय लोगों ने देख लिया कि लाखों रुपये के नोट रखने वालों को भी अपनी इच्छा विरुद्ध गेहूँ के स्थान में मक्का और बाजरा खाना पड़ा। इस समय भी भोजन का सबसे अधिक स्वास्थ्य प्रद भाग गो दूध और घृत केवल उनको प्राप्त है जिनके पास गाय है शेष प्रायः सब ही नोट रखने वाले विष मिला घृत और रोगप्रद अशुद्ध बाजारू भैंस का दूध पीते हैं। स्वराज्य प्राप्त के पश्चात् भी हमारी रोटी का प्रश्न जो हल होने में नहीं आरहा है उसका मुख्य कारण हमारी यही भूल है कि हमने गाय के स्थान में कागज के टुकड़ों को धन समझा है। हमारे पूर्वजों का केवल गाय को ही—

गौ धन

कहने का कारण यह है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। आज ८६% लोग यहां कृषि करते हैं, और बहुत से अन्य बड़े २ काम करने वाले भी खेती के मोह को नहीं छोड़ पाते क्योंकि वास्तव में यही हमारी आय का असली साधन है। खेती के लिये भूमि और बीज के अतिरिक्त (१) बैल (२) खाद (३) पुरुषार्थ और (४) बुद्धि की आवश्यकता है। बुद्धि और पुरुषार्थ होने पर थोड़ी ही भूमि में कम बीज से अधिक अन्न उत्पन्न किया जा सकता है और थोड़ा ही

अन्न खाकर अधिक शक्तिशाली बना जा सकता है। इस प्रकार यदि ज़रा गम्भीरता से विचार करें तो गाय कृषि के सब ही साधन प्रदान करती है, क्योंकि—

१ बैल—गाय का ही पुत्र है जो हल चलाता है और खेती का सब ही सामान इधर से उधर ढोता है। आज तो कुछ को छोड़कर प्रायः बैलों की दशा देखकर दया आती है। पर यदि गौ की ओर विशेष ध्यान दिया जावे तो प्राचीन समय की भांति हाथी जैसे बैल बनाए जा सकते हैं। विदेशी यात्री मार्कोपोलो ने जो यहां तेरहवीं शताब्दी में आया था, अपनी यात्रा की पुस्तक में लिखा है कि "भारतीय बैल हाथी के समान दिखाई देते थे।" अब से केवल तीन सौ वर्ष पूर्व की पुस्तक आईने अकबरी में लिखा है कि यहां के बैल घोड़े से अधिक तेज़ दौड़ सकते थे और गाएं प्रायः २५--३० सेर दूध देती थीं। इसी दूध को भरपेट पीकर ऐसे बैल तय्यार होते थे। गाय के वंश सुधार का नियम यह है कि पहले मास में बच्चे को भर पेट दूध पिलाने के पश्चात शेष दूध उसी गाय को अन्न के साथ खिलादें। (इसी कारण हिन्दुओं में नवीन व्याई गाय का दूध छूत माना जाता है) दूसरे मास में भर पेट बछड़े को पिलाने के पश्चात् एक ही थन का दुहें, और तीसरे मास से आधा दूध लेना आधा बछड़े को देना चाहिये। इस प्रकार करने से हाथी के समान बैल और कामधेनु गाय बनाई जा सकती हैं। इन बैलों की खेती द्वारा देश धन धान्य से पूर्ण होता था। कुछ लोग विदेशी शिक्षा के प्रभाव में ट्रैक्टर को बैल से अधिक उपयोगी समझते हैं। यह उन की भूल है। ट्रैक्टर में निम्नलिखित दोष हैं :—

प्रथम ट्रैक्टर का रुपया विदेश को जाता है। दूसरे उसके चलाने का तेल भी विदेश से आता है। यदि किसी लड़ाई झगड़े के कारण तेल आना बन्द हो जावे तो हम भूखों मर जावें।

तीसरे छोटे किसान जिनकी संख्या हमारे देश में अधिक है न तो ट्रेक्टर खरीद सकते हैं न उनको वह उपयोगी है। बड़े २ फार्मों का रिवाज होने से कृषि का कार्य भी शकर की भांति बड़े २ पूंजीपतियों के हाथ में चला जावेगा और छोटे किसान पिसकर रह जावेंगे। चौथे ट्रेक्टर की दुर्गन्ध से वायुमंडल दूषित होकर रोग उत्पन्न करता है जबकि गाय बैल का गोबर प्रथम अपनी गंध से रोग कृमियों को मारता है पीछे सब से उत्तम खाद और औषधि का काम देता है और अधिक हो तो ईंधन का काम भी दे सकता है। इस समय तो खाद के लिये भी पूरा नहीं है। पाँचवें–कुछ वर्षों में ट्रेक्टर खराब होकर किसी काम का नहीं रहता और उसकी क़ीमत का रुपया समाप्त हो जाता है। जबकि एक बार की खरीदी गाय का वंश बराबर बढ़कर राष्ट्र को सर्वदा लाभ पहुँचाता रहता है। छठे--अमेरिका के एक बड़े वैज्ञानिक का मत है कि ट्रेक्टर से जोती भूमि २० वर्ष में बंजर हो जाती है। रुद्रपुर जिला नैनीताल में अभी हमारी सरकार ने वर्तमान उन्नत साधनों से युक्त खेती करने को एक नवीन नगर बसाया है। ट्रेक्टर द्वारा जङ्गल तोड़कर हज़ारों एकड़ भूमि में सरकारी फार्म बनाया गया है और शरणार्थी तथा कांग्रेस द्वारा जेल काटे हुये लोगों को भी भूमियां मिली हैं। वहां के निम्नलिखित २ प्रतिष्ठित सज्जनों का प्रत्येक्ष अनुभव इस प्रकार है :—

(I) ब्रह्मचारी जी गोरखपुर वालों ने बताया कि पहले हमने २५ हज़ार में ट्रेक्टर खरीदकर उससे खेती की। पर ३ वर्ष तक बराबर घाटा ही होता रहा। फिर ट्रेक्टर आधे दामों पर बेच दिया और बैलों से खेती की। तब लाभ हुआ और पुराना घाटा भी पूरा होगया।

(II) श्री बालेश्वर सिंह जी बलिया निवासी ने जो १८ वर्ष की

देश सेवा में ६ वर्ष जेल में रहे हैं, बताया :-पहले हमने ट्रैक्टर से खेती की। पर काम न चला। अब बैलों से करते हैं। साथ ही गऊ सेवा भी गौकरुणानिधि के आदेश अनुसार करते हैं। तब से ईश्वर कृपा से हमें लाभ है और हमने एक गऊ यहाँ से जीर्ण अवस्था में ली। उस समय वह केवल २ सेर दूध दोनों समय में देती थी। पर सेवा करने से आज वही गऊ १८ सेर दूध रोज देती है। अन्य दुधार गौएं भी हमारे पास हैं। पर हम दूध बेचते नहीं। सब दूध अपने खर्च में लाते हैं। हमारे सब ही नौकर भी घर के लोगों की भाँति ही इच्छानुसार घी दूध पाते हैं।

सातवें-बैल हर स्थान पर माल ढोने और सवारी का काम भी देते हैं। जिनके बढ़ने से मोटरों का खर्चा भी कम होकर देश को करोड़ों रुपए का लाभ होगा।

(२) खाद :--गौ हत्या के कारण देश में गौओं की संख्या बहुत घट जाने से आज करोड़ों रुपये की खाद भी विदेशों से खरीदी जाती है जो हमारे धन के नाश के साथ २ स्वास्थ्य तथा बुद्धि का भी नाश करती है। गोबर की खाद की श्रेष्ठता को अब नवीन बैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं। आप स्वयं अनुभव करके देख सकते हैं कि गोबर और गौमूत्र की खाद से जो सब्जी गाजर मूली इत्यादि उत्पन्न की जाती हैं उनमें एक विशेष स्वाद मिठास लिये होता है और धीमी सुगन्ध होती है। इसके विरुद्ध विलायती खाद से उत्पन्न सब्जी खारीपन लिये स्वाद और सुगन्ध रहित होती है। परन्तु जब तक देश में गौ धन बढ़ाया नहीं जाता और बूढ़ी गायों को भी चमड़े के लालच में मारा जाता है देश को विदेशी खाद खरीदना ही पड़ेगी। "श्री डी० एच० जानी" ने अपनी "रोमांस आफ़ दी काऊ" नामी पुस्तक में बताया है "मान लो कि लगभग ५० करोड़ एकड़ भूमि में खेती होती है और इसका केवल दसवाँ हिस्सा खलिहान की खाद पाता है। ऐसी अवस्था में यदि

शेष४५ करोड़ एकड़ भूमि भी खलिहान की खाद पा सके तो लगभग ४५ × ५ अर्थात् २२५ करोड़ रुपये का वार्षिक लाभ देश को होगा जिसके लिये ५० करोड़ पशुओं की आवश्यकता होगी।"

यदि इन पशुओं में सब ही गाय, बैल होवें तो खाद, भोजन, सवारी, ट्रैक्टर, रोग, निर्बलता, चिकित्सा, बुद्धि हीनता, बेकारी और निधनता सबही रोगों की चिकित्सा हो जावें। हमारे पूर्वजों ने कहा है कि गाय के गोबर में लक्ष्मी है। उसका अर्थ यही है कि उसकी खाद से अन्न अधिक और स्वास्थ्य प्रद उत्पन्न होता है। बृद्ध गौओं के वध करने को कुछ लोग यह युक्ति दिया करते हैं कि यह देश पर भार हैं और दूध देने वाले पशुओं के चारे में हिस्सा बटाती हैं। अतः इनको मारने में गौ भक्तों को आक्षेप नहीं करना चाहिये। हमारा उत्तर यह है कि प्रथम तो यह मनुष्यता से गिरी हुई युक्ति है। आयु भर जिस गऊ का दूध पिया, बैल लिये, खाद ली, बछिया ली और मरने के पीछे खाल हड्डी इत्यादि भी लेवेंगे उसके विषय में ऐसा सोचना महा नीच मनोवृत्ति भारतीय सभ्यता के विरुद्ध है। तिस पर भी यदि ऐसे पशुओं के राष्ट्रीय चरागाहों और उनके गोबर और मूत्र को एकत्रित करके ठीक ढंग पर खाद बनाने का प्रबन्ध किया जावे तब इस वृद्धावस्था में भी वह राष्ट्रीय धन बढ़ाने का साधन सिद्ध हो सकती हैं नकि बोझ परीक्षण करके देख लो।

(३) पुरुषार्थ और बुद्धि—इस समय किसान आलसी और मूर्ख हैं। इसका मुख्य कारण उनका अपर्याप्त भोजन है। बिना मक्खन, घी के सूखी रोटी, दूध, मठा कुछ नहीं। उसपर तम्बाकू और चाय जैसी हानिकारक वस्तुओं का प्रयोग। इसके ऊपर से वनस्पति आइल का विष पान। इस भोजन के प्रभाव से यदि किसान आलसी और मूर्ख बनें तो आश्चर्य ही क्या है। घी, दूध का भोजन मिलने से स्वयं ही चुस्ती फुर्ती और बुद्धि की तीव्रता आवेगी

जिससे कार्य अधिक करने से वह देश का धन बढ़ावेंगे और तम्बाकू व चाय में जो भूमि घेरी जाती है उसके बचने से अन्य वस्तुओं की उपज से देश का धन और भी बढ़ेगा। राष्ट्र में गो दुग्ध बढ़ने से समस्त राष्ट्र का स्वास्थ्य, बल, धन, सम्पत्ति और बुद्धि बल बढ़ेगा। यह बात भी याद रखने की है कि गोदुग्ध पीने से सात्विक और मेधावी बुद्धि बढ़ती है जिससे विश्व प्रेम और प्रभु भक्ति की भावना आती है। मांस, मछली, अन्डे का भोजन स्वार्थ और क्रूरता के भाव उत्पन्न करता है। जो मनुष्य अपने स्वाद के लिये दूसरे की जान ले लेता है वह जनता का खून चूसे और भ्रष्टाचार फैलावें तो आश्चर्य ही क्या है। प्रत्यक्ष देखने में आ रहा है। देश में जितना मछली, मांस, अंडे का प्रचार बढ़ाया जा रहा है, उतना ही भ्रष्टाचार अन्याय और रिशवत का बाजार गरम हो रहा है।

(४) भोजन और स्वास्थ्य-भोजन की मनुष्य को सर्वदा ही आवश्यकता रहती है। गोदुग्ध और ताजे फल थोड़े से ही अन्न के साथ संसार में सर्व श्रेष्ठ भोजन हैं जो जहाँ भूख को शांत करते हैं वहाँ स्वास्थ्य वा निरोगिता भी प्रदान करते हैं। यदि अन्न का भोजन न मिले केवल फल ही मिलें तो मनुष्य जीवित और निरोग तो रह सकता है पर पूर्ण शक्तिशाली बलवान नहीं बन सकता। हां गोदुग्ध संसार में अकेला ऐसा पदार्थ है जिस को पाकर दीर्घजीवी और पूर्ण बलवान बन सकता है क्योंकि इस में भोजन के वह सब ही तत्व विद्यमान हैं जिनकी हमें जीवन और स्वास्थ्य के लिये आवश्यकता है। प्राचीन समय में तो अनेकों महान पुरुष केवल गोदुग्ध पान करके भोजन बनाने के सब खटरागों से समय बचाकर परोपकार के कार्य और प्रभु भक्ति में मस्त रहा करते थे। आज भी ऐसे लोग कहीं २ मिल जाते हैं, और पूर्ण स्वस्थ पाये जाते हैं। कठिन और लगभग असाध्य रोगों की चिकित्सा में तो हमने स्वयं

गोदुग्ध का स्वास्थ्यवर्धक प्रभाव रोगियों पर देखा है। जो रोगी औषधियों की सहायता से आरोग्य न हो सके वह दूध और फल के भोजन से आरोग्य हो गये। बम्बई के एक प्रसिद्ध सेठ मधुमेह रोग में ग्रसित होकर दसों वर्ष औषधि सेवन कर जब जीवन से निराश हो चुके। तब दूध और फल के भोजन से २० वर्ष तक जीवित रहे और न केवल ४–६ मील नंगे पैर भ्रमण करते थे किन्तु अपने व्योपार का भारी कार्य भी देखते थे। दूध के विषय में परीक्षण के पश्चात वैज्ञानिकों का मत इस प्रकार है :—

(क) आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रन्थ चरक का मत है। दूध सामान्य रूप से मनुष्य तथा समस्त चतुष्पाद जानवरों के स्वास्थ्य और विकास के लिये आवश्यक होता है। गाय का दूध सब से अच्छा होता है। यह बच्चों को जीवन जवानों को स्वास्थ्य और वृद्धों को शक्ति प्रदान करता है।" (यह सूत्र रूप में संकेत मात्र है विस्तार से दूध के गुण आगे बताये जावेंगे)

(ख) सरकारी परीक्षण

(1) पिछले दिनों सरकारी तौर पर मद्रास में स्कूल के बालकों पर परीक्षण किये गये। कुछ ६ वर्ष के बालकों को २ मास तक एक गिलास दूध नित्य भोजन में दिया गया। तो उनका भार एक पौंड और लम्बाई $1\frac{1}{3}$ इंच बढ़ी। दूसरे उसी आयु के बालकों को दूध बिलकुल नहीं दिया गया उनका भार केवल $\frac{1}{4}$ पौंड और लम्बाई $\frac{1}{10}$ इंच बढ़ी। यह केवल एक गिलास दूध का प्रभाव है। प्राचीन समय जब बच्चों को पेट भर गाय का दूध मिलता था तब ही भीम, अर्जुन जैसे योधा बनते थे और पातंजल, कपिल, कणाद, चाणक्य और पाणिनि जैसे मस्तिष्क वाले होते थे।

२–इससे पूर्व पूज्य मालवी जी ने लिखा है कि भारत सरकार द्वारा दूध के व्यवसाय पर नियुक्त की गई कमेटी के सदस्य आधुनिक

विशेषज्ञों ने दूध के गुण अपनी रिपोर्ट में इस प्रकार लिखे हैं :—

मनुष्य के भोजन में दूध का व्यवहार तभी से चला आता है। जब से मानव इस जगत में आया है। जितने ऐसे खाद्य पदार्थ हैं। जो अकेले आहार के काम में आ सकते हैं। दूध सबसे अधिक पूर्ण है। इसलिये वह सदा बड़ा आदरणीय समझा जाता रहा है। इस के अंदर जीवन को स्थिर रखने तथा बढ़ाने के लिये आवश्यक सभी तत्व सुपाच्य रूप में विद्यमान हैं। आज तक किसी ऐसे दूसरे स्वतन्त्र आहार का पता नहीं चला, जिसका प्रयोग दूध के स्थान पर किया जा सके।

३–सं० १६४३ में भारत सरकार की सम्मिति दूध के विषय में "मानव जाति के लिये ज्ञात भोजनों में दूध सबसे अधिक पूर्ण भोजन है।" "अति प्राचीन ज्ञात भोज्य पदार्थों में दूध सब से अधिक पूर्ण भोजन है।"

(देखिये पृष्ट १५ तथा ८० भारत सरकार की रिपोर्ट सं० १६४३ ई० मार्केटिंग आफ मिल्क इन इंडिया)

४–लीग आफ नेशन्स की सम्मिति "जो वस्तुऐं हमें प्राप्त हैं, उनमें केवल दूध ही एक ऐसा पदार्थ है, जो सम्पर्ण भोजन के अधिक निकट पहुँचता है। हमारी जानकारी में दूसरा कोई ऐसा पदार्थ नहीं है जो अकेला दूध के स्थान में ग्रहण किया जा सके।"

"मानव जाति द्वारा आहार के रूप में गाय तथा अन्य दूध के पशुओं के दूध का प्रयोग इतना ही प्राचीन है, जितना मानव जाति का इतिहास। इस दीर्घ काल में दूध के इस रूप में प्रयोग होने के कारण इसके मूल्य को बहुत ऊंचा स्थान प्रदान किया गया है।" (देखिये लीग आफ नेशन्स की न्यूट्रिशन रिपोर्ट १६३७ सन् की सीरीज)

५–इंगलैंड की सरकार की बुद्धिमानी—इंगलैंड की सरकार

खोजने पर ज्ञात हुआ कि वह गाय की लस्सी (मठा) अधिक प्रयोग करते हैं। मठा में जो कीटाणु अथवा परमाणु होते हैं डाक्टरी में उन्हें लैकटिक कहते हैं। यही दूध को दही बनाते हैं, और इन ही के कारण आयु बढ़ती है। क्योंकि आंत के अन्तिम भाग में मल एकत्रित होने से उस में लाखों कीटाणु उत्पन्न होकर मल को दुर्गन्धित बना देते हैं। जो लोग मलाशय को साफ रखने का प्रबन्ध करते रहते हैं उन्हें छोड़कर मल के इन कीटाणुओं के कारण ही बृद्धावस्था शीघ्र आती है और मनुष्य की आयु कम हो जाती है। मठ्ठा के कीटाणु इन मल के कोणों को खा जाते हैं दूसरे शब्दों में मठ्ठा के परमाणु मल के दूषित परमाणुओं को नष्ट कर देते हैं, और आन्तों को कोई हानि नहीं पहुँचाते। जबकि अन्य सब ही औषधियां आंतो को बिना हानि पहुँचाये इन कीड़ों को नहीं मार सकतीं। गाय के मक्खन और घी में भी यही गुण हैं इसी कारण आयुर्वेद गाय के दूध, मठ्ठा, घी, मक्खन सब ही को आयु वर्धक मानता है।

(घ) हमारे भोजन में उत्तम प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट (चीनी और स्टार्च) चिकनाई, खनिज लवण और विटामिन सम्मिलित होना चाहिये तब ही हम जीवित और स्वस्थ रह सकते हैं। यह सब ही पदार्थ दूध में पर्याप्त और उचित मात्रा में पायेजाते हैं। दूध की प्रोटीन सब ही प्रोटीनों से बढ़िया होती है और इतनी अच्छी होती है कि स्वयं ९७% पच जाती है और साथ ही गेहूँ की प्रोटीन को भी तीन गुणा पचा देती है अर्थात् यदि हमें भोजन में दूध न मिले और गेहूँ भर पेट मिले तब गेहूँ की प्रोटीन केवल २०% पच पाती है और दूध भी मिले तब ६०% पच जाती है। इसी प्रकार दूध की चीनी भी सब चीनियों में श्रेष्ट है जो खूब बल देने के अतिरिक्त पाचन शक्ति को भी बढ़ाती है जिन बालकों को वैसे दूध नहीं पचता उनको दूध की चीनी (Sugar of Milk) डालने से पच जाता है।

चिकनाई (Fat) दूध की चिकनाई भी अन्य सब चिकनाइयों से उत्तम है स्वाद में भी घी के बने पदार्थ तेल, चेनी, वनस्पति आइल सबसे बढ़िया होते हैं। गाय के घी के बने पूरी पकवान अपेक्षाकृत सुगमता से पच जाते हैं। घी, कृमि नाशक है गाय का घी इस गुण में सब घीयों से श्रेष्ठ है। यह खाने, लगाने और हवन, यज्ञ विधि से अग्नि में जलाने सब प्रकार से रोग कृमि का नाश करता है। जबलपुर टी० बी० सेनेटोरियम में जहां यज्ञ चिकित्सा से ८०% रोगियों को लाभ हुआ था देखा गया कि जब शुद्ध गाय के घी से हवन हुआ तब लाभ अपेक्षाकृत शीघ्र हुआ (२) मद्रास के सेनेटरी कमिश्नर डाक्टर किंग साहब ने प्लेग के समय घी, केसर और चावल से हवन करने को विद्यार्थियों को उपदेश किया था जिससे उन का प्लेग से संरक्षण रहे। इस विषय की अधिक जानकारी करना हो तो हमारी पुस्तक 'यज्ञ चिकित्सा' पढ़ें। जिसके द्वारा आप न केवल संक्रामिक रोगों से सुरक्षित रह सकते हैं किन्तु टी० बी० के कठिन रोगियों की चिकित्सा भी कर सकते हैं। इस चिकित्सा के सिद्धान्त का अनमोदन सैकड़ों वर्ष की खोज के पश्चात आज अमेरिका भी करता है और डाक्टर इसको सबसे श्रेष्ठ चिकित्सा बताते हैं (देखो लीडर इलाहबाद ता० ६-४-५५ पृष्ठ ३ कालम ५ शीर्षक New Cure for T. B. of Lungs)

(३) कृषि गवेषना परिषद ने परीक्षण के पश्चात बताया है— "वनस्पति की पोषण शक्ति का प्रयोग करने पर सिद्ध हुआ है कि गाय के दूध का घी अन्य सब चिकनाइयों व तेलों से जिनमें मूंगफली का बनाया हुआ तेल (वनस्पति) भी शामिल है निश्चित रूप से उत्तम है (देखो परिषद का वार्षिक प्रतिवेदन सं० १९५०-५१ ई० अथवा अर्जुन ता० २१-६-५१)

इस प्रकार दूध में २५ प्रकार के खनिज लवण जिन में कैलशियम हड्डी बनाने को फासफोरस हड्डी और मस्तिष्क बनाने को

और लोहा रक्त में लाली बनाये रखने को तथा आयोडीन शरीर में जीवट और फुर्ती लाने को और थाइराइड ग्लैंडस को ठीक रखने को हमें बहुत आवश्यक होते हैं ऐसी अवस्था में पाये जाते हैं कि हमारे रक्त में सुगमता से घुल मिल जाते हैं। इन नमकों की कमी से जब शरीर में कोई रोग हो जाता है तब आइरन, फासफोरस, कैलशियम इत्यादि औषधियां देकर हम डाक्टर लोग इस कमी को पूरा किया करते हैं, और अनेक अवसरों पर उससे लाभ भी होता है। पर इस प्रकार वह शरीर में घुल मिल नहीं पाते और उन का कुछ भाग विजातीय द्रव्य की भाँति शरीर में जमा रहता है जो कभी रोग के रूप में प्रगट होता है। पर जो लोग नित्य गोदुग्ध का सेवन करते हैं उनके भीतर न इन लवणों की कमी होती है और न औषधि की आवश्यकता होती है। गर्भ काल में और केवल दूध पीने की आयु तक बालक इन लवणों का बड़ा भाग माता से ही ग्रहण करता है। इसी कारण ऐसी अवस्था में माता को गाय के दूध का भोजन पर्याप्त मात्रा में मिलना चाहिये अन्यथा बालक और माता दोनों रोगी और निर्बल हो सकते हैं। अब विटामिन को लीजिये।

विटामिन

नये युग की खोज में पहले कैलोरी की बड़ी धूम थी पर पीछे ज्ञात हुआ कि यह मार्ग ठीक नहीं है उष्णांक की पूर्ति होते हुए भी रोग हो जाते हैं। तब विटामिनों का पता लगाया गया जिनका भोजन में होना परम आवश्यक माना जाता है। दूध में भी विटामिनों की खोज की गई तो ज्ञात हुआ कि उसमें सब ही विटामिन उचित मात्रा में विद्यमान हैं। विशेष रूप से ए० बी० सी० और ई पर्याप्त मात्रा में रहते हैं। विटामिन ए की कमी से आंख के रोग होते हैं बी की कमी से निर्बलता और सी की कमी से दान्त और हड्डी के रोग इत्यादि अतः दूध पीने वाले की इन सब रोगों से रक्षा

होती है। जब हमारे देश में गऊ रखना धर्म का अंग समझा जाता था और नित्य दूध पीना अनिवार्य था तब सौ २ वर्ष के बूढ़ों को भी आंख के आपरेशन की आवश्यकता नहीं पड़ती थी आज जिसे देखो मोतिया बिन्द का रोगी है। बालक भी ऐनक लगाने लगे हैं यह गोदुग्ध की कमी का ही परिणाम है।

अमेरिका के पेसी-वोनेया कालिज के वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान किया है कि विटामिन बी तो गौ के पेट में सतत बनता ही रहता है। गोमूत्र में भी विटामिन का तत्व रहता है। दूध में विटामिन की पर्याप्त मात्रा उत्पन्न करने के लिये गाय को कुछ हरी घास सब्जी इत्यादि खिलाना चाहिये, और माता के दूध में विटामिन उत्पन्न करने को ऐसी गाय का दूध पिलाना अनिवार्य है। गर्भ काल से लेकर दूध पिलाने तक तो माता को अवश्य ही ऐसा दूध देना चाहिये। नवीन खोज से यह बात भी सिद्ध हो चुकी है कि मांस खाने वाली मां के दूध में कोई विटामिन नहीं रहते अतः बालक की कुशल चाहने वाली मां को मांस का भोजन कदापि न करना चाहिये और गोदुग्ध नित्य पीना चाहिये।

आधुनिक विज्ञान ने जब से दूध के गुणों को समझा है सब देशों ने अपने २ यहाँ गोदुग्ध की उपज को खूब बढ़ाया है। और उसकी खोज भी बराबर जारी है। डा० ज़बिन्दन (Zbinden) ने पता लगाया है कि गोदुग्ध में कई धातुऐं भी होती हैं जैसे तांबा अभ्रक (शक्ति बढ़ाने को इन की भस्में वैद्य लोग हमें खिलाते हैं) सीसा, अलमूनियम, कांसा, क्रोमियम, टिन इत्यादि स्त्री के दूध में "चाँदी" का भी कुछ अंश मिलता है (कदाचित इसी कारण टी० बी० के असाध्य रोगी जो किसी औषधि से अच्छे नहीं होते यज्ञ चिकित्सा के साथ किसी माता का दूध पिलाने से अच्छे हो सकते हैं) प्रशंसित डाक्टर साहब का कहना है कि दूध में ऊपर लिखी वस्तुऐं बहुत थोड़ी मात्रा में होती हैं पर इनसे दूध की बल-वर्धक

और रोग निवारक शक्ति बहुत बढ़ जाती है। दूध में थाइरायडग्लैंड (कंठमणि) का रस भी मिलता है। (इसी रस के बूते पर कुछ वैज्ञानिक बूढ़े को युवा बनाने का दम भरते हैं।) इसी कारण दूध से शरीर वर्धन में बड़ी सहायता मिलती है अर्थात् खूब गोदुग्ध पीने वाले बालक डील डौल में खूब बढ़ते हैं जैसा कि सरकारी परीक्षण से भी सिद्ध होचुका है। जिसका उल्लेख पीछे किया जा चुका है जो पाठक चाहें यहां बरेली में प्रत्यक्ष उदाहरण हम दिखा सकते हैं।

(ङ) अमेरिका के डाक्टर बैकफील्ड गाय की प्रशंसा करते हुये लिखते हैं "सच पूछो तो गाय खुशहाली की माता है। प्राचीन भारत के लोग दूध, मक्खन का अधिक प्रयोग करते थे इसी लिये, हृष्ट पुष्ट, बुद्धि, शक्ति और स्मरण शक्ति ऊंचे दर्जे की रखते थे। उन्हों ने संस्कृत जैसी वैज्ञानिक और विस्तृत भाषा का आविष्कार किया और वेद जैसी बड़ी पुस्तक को कंठस्थ किया और अध्यात्मकता को संसार में फैलाया। इन सबका कारण गोदुग्ध ही था। यह प्रत्येक विद्या के पूर्ण विशेषज्ञ थे। फ़िलासफ़ी, राजनीति, क्षत्रियत्व और अध्यात्म विद्या में उच्च होने का कारण गोदुग्ध का अधिक प्रयोग ही था।

(च) अमेरिका के डाक्टर वर्नर मेकफेडन ने अपने रोगियों पर परीक्षा करने के पश्चात एक पुस्तक "इनसाइक्लोपिडिया आफ हेल्थ" लिखी है जो वहाँ प्रसिद्ध है उस में गोदुग्ध के स्वास्थ्य वर्धक और रोगनाशक गुणों की बड़ी प्रशंशा की है।

(छ) हिन्दू विश्व विद्यालय के डा० एन० ए० गाडवेल ने वैज्ञानिक रिसर्च के पश्चात दूध के स्वास्थ्य वर्धक गुणों पर जो अमूल्य पुस्तक लिखी है। उसमें दूध का भोजन अमृत समान बताया है। युधिष्ठर महाराज ने भी यक्ष के इस प्रश्न के उत्तर में कि संसार में अमृत क्या है "गोदुग्ध" बताया था (देखो महाभारत)

(२१५५) (पुस्तकालय) इलाहाबाद

(ज) हमारे रक्त में जो श्वेतकण हैं वह शरीर में किसी रोग कृमि के आने पर उनको मारने या भगाने के लिये युध्द करते हैं यदि वह श्वेत कण जीत जाते हैं तो रोग नहीं होने पाता है। वैज्ञानिक परीक्षण से सिध्द हो चुका है कि दूध के भोजन से वह श्वेत कण बड़ी संख्या में और बहुत शीघ्र बनना आरम्भ हो जाते हैं। इस कारण भी दूध रोग प्रतिशोधक और स्वास्थ्य वर्धक है।

(झ) शरीर के स्वास्थ्य बिगड़ने और रोगहोने का मुख्य कारण शरीर में विजातीय द्रव्य अथवा विकार का रुकना है; और दूध का गुण जैसा कि आयुर्वेद ने बताया है शरीर से बिकार निकालना है। इस कारण नित्य गोदुग्ध सेवन करने वाले के विकार निकलते रहते हैं और वह प्रायः रोगी नहीं होता।

(ण) किसी भी उत्तम से उत्तम प्रोटीन वाले पदार्थ की प्रोटीन शरीर में आवश्यकता से अधिक पहुँच जावे तो वह वहाँ सड़ने लगती है और रोग उत्पन्न करती है। पर दूध की प्रोटीन यदि अधिक पहुँच जावे तो वह सड़ती नहीं अपितु दुग्धामल अथवा लैक्टिक एसिड में बदल जाती है। जिस से रोग के कीटाणुओं का नाश होता है। इस प्रकार भी वह स्वास्थ्य को लाभ ही पहुँचता है। इसका यह अर्थ नहीं कि पाचन शक्ति से अधिक दूध पी लिया जावे। क्योंकि ऐसा करने से अन्य प्रकार की हानि हो सकती हैं।

(प)स्वास्थ्य और आयु का घनिष्ट सम्बन्ध है जो चीज़ स्वास्थ्य वर्धक है वह आयु भी बढ़ाती है। हमारे यहाँ शब्दों की रचना भी वैज्ञानिक है। चिकित्सा शास्त्र आयुर्वेद के अन्तर्गत है। आयुर्वेद का अर्थ आयु सम्बन्धी ज्ञान अर्थात् आयु बढ़ाने वाला ज्ञान है। दूध से आयु, बुध्दि सब ही बढ़ती हैं यह आयुर्वेद का मत है इस मत का अनमोदन वर्तमान बिज्ञान भी कर रहा है और इतिहास भी। जब हमारे देश में गोधन अधिक था तब राम, कृष्ण, भीम,

अर्जुन और भीष्म पितामह जैसे योधा उत्पन्न होते थे जो सैकड़ों वर्ष की आयु पाते थे और बड़ी आयु में भी महाभारत जैसी लड़ाई लड़ सकते थे। महाभारत युद्ध के समय भीष्म पितामहा जी की आयु १६० वर्ष के ऊपर थी और अन्य पाण्डव इत्यादि भी ८०-६० वर्ष की आयु को पहुँच चुके थे। प्राचीन ऋषियों की बुध्दिमानी का लोहा आज भी समस्त संसार के विद्वान मानते हैं। अमेरिका के डाक्टर बैक फील्ड ने तो साफ शब्दों में इन सबका कारण गाय को माना है जैसाकि ऊपर लिखा जा चुका है। आज भी गोरस का सेवन ऐसे ही परिणाम दिखाता है। रूस के रिसर्च का वर्णन हम ऊपर कर ही चुके हैं। इटली का जारू षाशा अभी पिछले दिनों १६१ वर्ष की आयु में मरा है उसका कहना था कि मेरा विशेष भोजन दूध और फल है। यह मांस से घृणा करता था। इंगलैंड के प्रसिद्ध लेखक वरनार्डशाह ने जो अपनी बुद्धिमानी के लिये संसार में प्रसिद्ध थे और १०० वर्ष की आयु को पहुँचकर मरे हैं। अधिक आयु और स्वास्थ्य का कारण पूछने पर अपने खाने की मेज देखने को कहा था जिसपर दूध और फलों की अधिकता थी। शराब, मांस, तम्बाकू इत्यादि के प्रयोग को वह बहुत बुरा समझते थे, महात्मा गान्धी, ऋषि दयानन्द जी इत्यादि जितने भी बड़े मस्तिष्क के लोग हुये हैं सबका विशेष भोजन दुग्ध रहा है। बदायूँ के जिले में आर्यनगर (इस्लाम नगर) नाम का एक कस्वा है। वहां के कुछ सज्जन बालकपन से अपने लड़कों को खूब गोदुग्ध पिलाते थे ऐसे लड़कों की बहु संख्या आज सरकारी उच्च पदों पर प्रशंसा पूर्वक कार्य कर रही हैं। ऐसे ही मेरठ के जिले का उदाहरण गो सेवा मंडल के कोषाध्यक्ष जी ने बताए बा० जगदम्बा प्रसाद अमीन भूड़ बरेली ने बताया कि गाय के घी से नित्य हवन यज्ञ करने से उनकी नेत्र ज्योति बढ़कर बुढ़ापे में ऐनक लगाना छूट गया बुद्धि और स्मरण शक्ति बढ़ाने में लेखक

ने स्वयं गाय और भैंस के दूध की तुलना में गो दुग्ध को बहुत उत्तम पाया है।

(फ) दूध के भोजन से अन्न का व्यय बहुत कम हो सकता है और देशवासी बचत का अन्न वेचकर दूसरों की सहायता कर सकते हैं तथा धन बढ़ा सकते हैं।

लार्ड लिन्लथगो द्वारा नियुक्त सन १९२८ ई० के रायल कमीशन ने अपनी रिपोर्ट के ४८१वें पृष्ठ पर डाक्टरी सम्मति उद्धृत करते हुये लिखा है कि प्रति वर्ष ५०-६० लाख मनुष्य ऐसे रोगों से मरते हैं जो रोके जा सकते हैं। इन्हीं रोगों के कारण भारत का प्रत्येक मजदूर प्रतिवर्ष २ व ३ सप्ताह काम पर नहीं जा सकता। अयोग्य पोषण तथा इन रोगों के कारण भारत के प्रत्येक मनुष्य की कार्य क्षमता के ह्रास का औसत २० प्रतिशत से कम नहीं है। इसके अतिरिक्त मजदूरी करने के लायक उम्र तक पहुँच सकने वाले बच्चों की औसत अभी लगभग ५० प्रतिशत है। जिसको ८०-९० प्रतिशत तक पहुँचा देना बहुत सम्भव है। मेडिकल कांफ्रेंस का विश्वास है कि जीवन तथा कार्य क्षमता को क्षति पहुँचाने वाले इन रोगों में प्रत्येक वर्ष भारत के अरबों रुपये नष्ट हो जाते हैं। तथा करोड़ों मनुष्यों को जो हानियां होती हैं और जो खर्च किया जाता है वह गणनातीत हैं।

इन सब ही हानियों और रोगों को देश में गोदुग्ध बढ़ाकर ही हम रोक सकते हैं।

(ब) दूध का भोजन करने वाले के पुरीष में केवल अन्न का भोजन करने वाले की अपेक्षा दुर्गन्ध कम होती है इससे वायु मंडल अपेक्षाकृत कम दुर्गन्धित होने से रोग कम होवेंगे।

(भ) प्राचीन ऋषि मुनि तथा आधुनिक सब ही विद्वान इस बात को एक मत से मानते हैं कि मनुष्य शरीर पञ्चभूतों से बना है और इसको अधिक समय तक सुरक्षित रखने को पञ्चभूतों का

शुद्ध रूप में उपयोग आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। इन भूतों के दूषित होने से ही सब संक्रामिक रोग महामरी, हैजा इत्यादि फैल जाते हैं और इनहीं के शरीर में दूषित होने से शरीर रोगी और शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है। हमारे पूर्वज तो सब ही इन भूतों का पूर्ण शुद्ध बनाये रखने का कारण यज्ञ को मानते थे ही परन्तु अब इस युग के बड़े वैज्ञानिकों में से भी कुछ लोग परीक्षण के पश्चात् यज्ञ की इस महिमा को स्वीकार करने लगे हैं और समय के साथ ऐसा मानने वालों की संख्या बढ़ती जाती है। (डा० किंग की खोज का हाल पाठक पढ़ ही चुके हैं) यह यज्ञ बिना गौ के असम्भव है। भारत में गौ घृत की मात्रा घटने से यज्ञों की संख्या घट गई और बढ़ने से बढ़ जावेगी। जिससे स्वास्थ्य लाभ के साथ साथ आर्थिक लाभ भी होगा।

इन सब ही तरीकों से गाय देश का धन बढ़ाती है इस कारण उसको गोधन, लक्ष्मी और रोहणी आदि के नाम से पुकारा जाता है।

५—बेकारी—देश की निर्धनता का एक मुख्य कारण इस समय काम की कमी और बेकारी है। सैकड़ों ग्रेजुएट ५०) मासिक की नौकरी करके अपने जीवन और स्वास्थ्य का नाश कर रहे हैं। हजारों बिलकुल खाली बैठे हैं। हजारों वकील और डाक्टर अपने काम को करते हुये काम की कमी से दुःख उठा रहे हैं। यदि जनता और सरकार मिलकर अथवा अकेले ही स्थान २ पर गोकरुणानिधि के अनुसार सभा बना कर गौशालायें खोल दें तो उपरोक्त सब पढ़ें लिखे और उनसे बीसों गुने अनपढ़ इस काम में लग कर देश की आय बढ़ाने के साथ स्वयं अपना जीवन निर्वाह सुखपूर्वक कर सक्ते हैं। साथ ही जो लोग इस काम में अपना धन लगावेंगे। उनको आरम्भ में चाहे प्रगट रूप में धन लाभ न हो। तब भी उनका परिवार गो दुग्ध पान करने से स्वास्थ्य और दीर्घजीवन का लाभ तो पावेगा ही तथा रोग कम होने से चिकित्सा का व्यय और

समय की बचत धन वृद्धि का कारण होवेंगे। इस काम की पंच-वर्षीय योजना बनाने से सरकार तुरन्त प्रत्येच्च फल देख सकती है। विलासिता के सब ही सामान सिग्रेट इत्यादि तथा मशीनें चाहे वह शक्कर की हों चाहे वनस्पति आयल बनाने की विदेशों से खरीदने से देश की कंगाली और भी बढ़ेगी तथा स्वास्थ्य का भी अधिक नाश होगा और यदि यह चीजें उधार खरीदी गई तब तो सर्वनाश ही होगा। क्योंकि कुछ काल पश्चात् यह मिट्टी के भाव भी न बिकेंगी। पर दुधारू गऊ के रूप में यदि जानदार मशीनें अमेरिका इत्यादि किसी देश से उधार भी खरीदी जावे तो देश को स्वास्थ्य और काम मिलने का लाभ तो पहिले ही दिन से होगा तथा गऊ अपना ऋण स्वयं ही चुका देगी और जितना ही समय बीतेगा उसकी सन्तान उत्तरोत्तर देश को धन-धान्य से पूर्ण करती जावेगी।

६—गाय से धन बढ़ने का प्रत्येच्च प्रमाण। श्रीयुत डा० एच० जानी ने अपनी पुस्तक "रोमांस आफ़ दी काऊ" में इसी समय की भारतीय बंगलौर नगर की "जिन" नामी गाय का जीवन चरित्र घटनाओं के आधार पर लिखा है जो इस प्रकार है :—
जिन नामी गाय ने अपने १६ वर्ष के जीवन काल में १५४७७६ पौंड दूध दिया ७ बछड़े और १० बछड़ी प्रदान कीं तथा १३६५) की खाद दी सब वस्तुएँ जो उसने अपने जीवन में प्रदान कीं १३०००) तेरह हजार रुपये के मूल्य की होती हैं। अब इसके बच्चे पृथक २ इसी प्रकार देश का धन बढ़ावेंगे। यदि उसको मार कर खा लिया गया होता तो केवल ७०—८० मांसाहारियों को एक समय का रोग-प्रद भोजन अवश्य मिल जाता किन्तु देश को इतनी बड़ी धन राशि से हाथ धोना पड़ता। अतः देश की निर्धनता को मिटाने का गऊ धन को बढ़ाने से बढ़ कर कोई दूसरा उपाय नहीं है। यदि नोट और सोना बढ़ भी जावे तब भी बिना गोधन बढ़े रोगी और मूर्ख रहने से हम उनकी रक्षा न कर सकेंगे। गऊ अपना अमृत पिला कर

जहां हमें रोगी होने से बचाती है वहां रोगी मनुष्यां को औषधि भी प्रदान करती है इस का वर्णन आगे पढ़ें।

मण्डल ४

गौ द्वारा रोगों की चिकित्सा

(अनभूत प्रयोग)

गाय का दूध, मठा, घी, मक्खन, गोबर मूत्र इत्यादि सब ही औषधि रूप से काम में आते हैं जिन का उल्लेख आयुर्वेद में स्थान २ पर आया है। विद्वान वैद्य तो जानते ही थे अब कुछ नवीन वैज्ञानिक भी इस विषय पर विचार करने लगे हैं। यहां हम प्रथम उपरोक्त चीजों के वैज्ञानिक गुण लिखते हैं। जिन रोगों में वह हितकारी बताए गए हैं उन सब ही में प्रयोग कर के लाभ उठाया जा सकता है। किस विधि से किस रोगी पर विशेष और शीघ्र प्रभाव होगा इसे अनुभवी चिकित्सक ही बता सकता है। इस विषय पर प्रथक एक बड़ी पुस्तक लिखी जा सकती है। उदाहरणार्थ यहां कुछ थोड़े प्रयोग लिखते हैं पाठक लाभ उठावें।

(१) गो दुग्ध के गुण :—दूध मधुर स्निग्ध, वात पित्त नाशक शीघ्र वीर्यकारो (वीर्य ही शरीर में बल और स्फूर्ति लाता है) शीतल सब प्राणियों के अनुकूल, जीवन व आयुवर्धक (अर्थात आयु भी बढ़ाता है और जीवट भी लाता है बलकारी मेधा को हित (शुद्ध बुद्धि बढ़ानेवाला) अत्यन्त वाजीकरण, अवस्था का स्थापक टूटे को जोड़ने वाला रासायन (अर्थात धीरे २ स्थाई शक्ति लाने वाला) वमन, विरेचन तथा वस्ती क्रिया के तुल्य गुणकारी (अर्थात जैसे इन क्रियाओं से शरीर का मल या विकार निकाल कर शरीर को शुद्ध किया जाता है उसी प्रकार नित्य गो दूध पीने से शरीर का मल नित्य ही साफ होता रहता है। और रोगों की जड़ कटती

रहती है) पुराना बुखार (T. B.) मन के रोग (क्रोध, ईर्षा, द्वेश, इत्यादि) शोथ (सूजन) मूर्छा, ग्रहणी, दाह पाण्डु रोग (Jaundice, यरकां) तृषा, हृदय के शूल, उदावर्त, गुल्म, मूत्राशय के रोग (सूजाक इत्यादि) गुदांकुर (बवासीर) रक्त पित्त, अतिसार योनि रोग Female diseases) श्रम (अधिक काम की थकान) ग्लानि तथा गर्भस्राव में सदैव हितकारी है। बालक, वृद्ध, शत से शीर्ण (अर्थात बालकपन या वृद्धपन से जो स्वाभाविक निर्बलता होती है और शरीर तलवार आदि से जख्मी होने से जो निर्बलता होती है) क्षुधा तथा मैथुन से कृश (अर्थात भूखे रहने तथा स्त्री-प्रसंग करने से जो निर्बलता होती है) मनुष्य को सदैव अत्यन्त हितकर होता है। गोदुग्ध विशेष रूप से दुग्धवर्धक (अर्थात स्त्रियों तथा दूध देने वाले पशुओं का दूध बढ़ाने वाला) और सदैव सेवन से वृद्धावस्था तथा सम्पूर्ण रोगों का नाशक है।

इसी कारण प्राचीन काल में देश में सब ही रोगों की कमी थी और बड़ी आयु के मनुष्य होते थे। स्त्रियां अधिक दूध पिला कर सन्तान को खूब बलवान बनाती थीं।

(२) धारोष्ण दूध के उपरोक्त गुणों के साथ विशेष गुण— वृष्य, धातुवर्धक, निद्राकारक, कान्तिप्रद, पथ्य, स्वादिष्ट, अग्नि प्रदीप करने वाला (अर्थात मन्दाग्नि (Dyspepsia) के रोगी की भी औषधि) अमृत सदृश्य और सब रोगों का नाशक होता है। युधिष्टिर महाराज तथा गांधी जी ने जो गाय के दूध को अमृत का शब्द प्रयोग किया है उस शब्द को आयुर्वेद ने विशेष रूप से धारोष्ण गो दुग्ध ही पर लागू किया है। वैसे गोदुग्ध हर अच्छी अवस्था में अमृत है।

दूध के सम्बन्ध में आधुनिक खोज इस प्रकार है। दूध एक अद्भुत द्रव है, जिसमें निम्न प्रकार की १०१ वस्तुएँ उचित मात्रा के मिश्रण में मिली होती हैं पर उन वस्तुओं को लेकर दूध का

निर्माण नहीं किया जा सकता (अर्थात मनुष्य उन वस्तुओं को मिलाकर दूध के बराबर गुण वाला पदार्थ स्वयं नहीं बना सकता उसके बनाने की पूर्ण मशीन केवल गऊ है जो घास-पात खाकर उस से १०१ वस्तुओं वाला दूध बना देती है) यही कारण है कि प्रभावोत्पादकता की दृष्टि से अन्य कोई भी वस्तु दूध का स्थान नहीं ले सकती। दूध के कुछ पोषक भाग अभी तक आधुनिक वैज्ञानिकों की पहचान में नहीं आये हैं। इसके ८ प्रोटीनों में १६ एमिनों अम्ल (Amino Acids) हैं ६ जीवन सत्व (Vitamins) ८ फेनक द्रव्य-पाचक रस (Enzymes), २५ खनिज (minerals), १ चीनी (दुग्ध शर्करा), ४ फासफोरस सम्बन्धी मिश्र द्रव्य (Phosphorus Compounds), और १४ नत्रजनीय तत्व (nitrogenous Substances) हैं; कुछ अज्ञात अन्य भाग हैं जिनमें कुछ ऊपर रहने वाले अंश हैं और कुछ इसके प्राकृतिक जलीय अंश में घुले हुए रहते हैं।

(३) भैंस का दूध भी हितकर है। पर भैंस का दूध गुण-दोष मिश्रित है। यह मीठा चिकना और गुरु होता है अर्थात बहुत देर में पचता है और बादी है। किन्तु बलवर्द्धक हैं। जो व्यायाम इत्यादि करके इसे पचा सकें उन को खूब शक्ति प्रदान करता है। साथ ही सुस्ती और नींद अधिक लाता है। और बुद्धि को ठस बनाता है। इस कारण (विद्यार्थी, अध्यापक, जज, वकील, डाक्टर, लेखक, ब्राह्मण, राजा, राजमंत्री, योगी, साधक, तत्ववेत्ता इत्यादि) सब ही मस्तिष्क सम्बन्धी काम करने वालों को अच्छा नहीं है (हमने स्वयं अनुभव करके देखा है और आयुर्वेद के मत को पूर्ण सत्य पाया है। आयुर्वेद के मत से टी० बी० के रोग में रस रक्त बहाने वाली नसों के स्रोत बन्द हो जाते हैं। गाय का दूध और मठा तो उन को खोलता है। पर भैंस का उन को अपने प्रभाव से अधिक बन्द करता है इससे टी० बी० के रोगी

को तो कभी भूल कर भी भैंस का दूध न प्रयोग करना चाहिये। उन नसों के भीतर जमने से मंदाग्नि भी उत्पन्न करता है क्योंकि अधिक चिकना होता है। इसी कारण इसमें खोया और घी अधिक बैठता है। जो लोग केवल शरीर का पशु बल बढ़ाना चाहें या काम शक्ति बढ़ाना चाहें और खूब व्यायाम करने को उद्यत हों तथा बुद्धि मोटी होने से न डरते हों उनको यह गाय के दूध घी की अपेक्षा अधिक हितकर है। परन्तु देश में जो टी० बी० मन्दाग्नि (Dyspepsia) और अर्श (बवासीर) के रोग व्यापक रूप से बराबर बढ़ रहे हैं वह देश में गो दुग्ध बढ़ने से ही नष्ट होवेंगे।

(४) बकरी का दूध :—बकरी का दूध गाय के दूध से भी हलका होता है। यह स्वस्थ अवस्था में तो गाय के दूध की समानता नहीं करता क्योंकि वैसी शक्ति प्रदान नहीं कर सकता। पर रोग की अवस्था में कभी २ गाय के दूध से भी बढ़कर हितकारी होता है। यह त्रिदोष नाशक है। इसकी विशेषता यह है कि यह ग्राही (दस्तों को बांधने वाला) पचने में हलका और अग्नि को दीप्त करने वाला है। यह क्षय, बवासीर (Piles) अतिसार (Diarrhoea) भ्रम (Gidiness) और ज्वर को नष्ट करता है। ठंडा होने के कारण जाड़ों में कुछ हानि कर सकता है। पर रक्त पित्त (अर्थात मुंह, नाक, आदि से खून आना) में लाभदायक होता है। बकरी का दूध कच्चा पीना हानिकारक है गरम कर के ठंडा होने पर पीना चाहिये कच्चे से हे फ़ीवर हो सकता है। बकरी के दूध का गुण उसकी खुराक के अनुसार बदल भी सकता है। बांध कर खाने वाली बकरी का दूध गुण में उतना उत्तम नहीं होता। छोटे बच्चों और रोगी तथा निर्बल बच्चों के लिये बकरी का दूध अमृत समान है।

सब ही देशों में आज गाय के दूध का प्रयोग कर के लोग अपनी बुद्धि और शक्ति तथा स्वास्थ्य को बढ़ा रहे हैं। हमारे देश

में भी प्राचीन समय में भी दूध शब्द से लोग गो दुग्ध को ही समझते थे। पर आज दुर्भाग्य से हमारे यहां जहां दूध का अभाव है वहां जो थोड़ा दूध मिलता है वह भी प्रायः भैंस का ही मिलता है। आयुर्वेद के मत से हम गाय और भैंस के दूध की तुलना ऊपर कर चुके हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी प्रयोगशाला में परीक्षण कर के गाय के दूध को ही सर्वश्रेष्ट माना है। इस विषय में उनका मत इस प्रकार है :—

१—भैंस की अपेक्षा गाय के धारोष्ण दूध में आक्साइड तथा तथा रिडक्टेस आदि (Oxide & Reductase & C) पाचक रसों (Renzymes) की प्रचुरता रहती है, जो पाचन में सहायता देने के अतिरिक्त दूध पीने वालों की शरीर रचना में पाये जाने वाले विषों टाकिसन्स तथा टोमेन्स (Toxens & Plomaines) नामक पदार्थों को दूर करते हैं। ग्रन्थि संस्थान, जो मनुष्य की शक्ति, पौरुष तथा रंग का सञ्चालन करता है; इन दुग्ध पाचक रसों से अधिक सहायता प्राप्त करता है। अतः गाय का दूध कुष्ट एवं क्षय आदि रोगों को दूर करने वाला एक निश्चयात्मक तत्व है। पर भैंस का इन रोगों में हानिकारक है।

२—गाय के दूध की प्रोटीन बड़े सुगमता से तथा भैंस की बहुत कठिनता से पचती है।

३—प्रोटीनों को भी पचाने वाली चिकनाई गाय के दूध में पर्याप्त मात्रा में रहती है। इसीलिये बच्चों तथा निर्बल अथवा साधारण पाचन शक्ति रखने वाले लोगों को विशेष रूप से और प्रौढ़ों तथा तीव्र अग्नि रखने वालों को भी साधारण रूप से गाय का दूध अधिक लाभदायक है। भैंस के दूध की चिकनाई एक विशेष मात्रा में और विशेष प्रकार की होने के कारण उतनी परिपूर्ण नहीं होती जितनी गाय की। गाय के दूध में ब्यूटिरिन (Butyrin) तथा दूसरी कोमल चीजें अधिक मात्रा में रहती हैं।

४— गाय का दूध हमारी शरीर रचना में सरलता से घुल जाता है और भैंस के दूध की अपेक्षा उसमें साबुनीकरण (Saponification वह प्रक्रिया जिसके द्वारा अलकली और चर्बी का पृथककरण होता है) कम होता है, इसीलिये विष्टा के साथ साबुन के रूप में जाकर नष्ट नहीं होजाता एवं यकृत, पित्त और उसके कार्य व्यापार को नुकसान पहुंचा कर शरीर के क्षारों का नाश नहीं होने देता। मन्द यकृत से उत्पन्न आंत सम्बन्धी कष्टों का कारण कड़ी चर्बी ही है। इसलिये गाय के दूध में रहने वाले कोमल स्नेह को प्रथम स्थान मिलना चाहिए। गाय के दूध में पाये जाने वाले विटामिन-पदार्थ निश्चय ही भैंस के दूध की अपेक्षा उच्च कोटि के होते हैं। क्योंकि गो दुग्ध में चिकनाई के द्रव भागों का जिन में विटामिन का केन्द्रीकरण होता है-आधिक्य है।

५—संसार में विटामिन का सबसे अधिक सम्पन्न स्रोत गाय के दूध का स्नेह पदार्थ है। द्रवता के लिये बिटामिन 'ए' और गाय की कोमल तथा रंगीन त्वचा होने से सूर्य की किरणों और रंगों द्वारा होने वाली प्रक्रिया के लिये विटामिन 'बी' और 'डी' गाय के दूध में भैंस की अपेक्षा अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। अपने एकीकरण गुण के कारण गाय विटामिनों की उपज तथा संग्रह में ऊंचा स्थान ग्रहण कर लेती है।

६—गाय के दूध के क्षार भी भैंस के दूध की अपेक्षा अधिक घुल जाने एवं पच जाने वाले रूप में होते हैं। वे क्षार स्वयं उपयोगी होने के साथ-साथ चर्बी वाले प्रोटीनों की पचाने में सहायता करते हैं।

७—स्वास्थ्यप्रद कीटाणु भैंस की अपेक्षा गाय के दूध में अधिक स्वतंत्रता से बढ़ते हैं। इसी कारण गाय के दूध का दही भैंस की अपेक्षा सुगमता से जम जाता है।

८—पोषण तत्व भी भैंस की अपेक्षा गाय के दूध में अधिक हैं

अर्थात जितना पोषण भैंस के सेर भर दूध से मिलता है वह गाय के आध सेर या तीन पाव दूध ही से मिल जाता है।

६—भैंस के दूध में उष्णोत्पादक तत्व अधिक मात्रा में रहते हैं। जिस से यह गाय के दूध की अपेक्षा शरीर को अधिक गर्म कर देता है। गाय का दूध शीतल व पोषक होता है। अतः मस्तिष्क से काम करने वालों के लिए बहुत अधिक लाभदायक है।

१०—घोल की दृष्टि से, गाय का दूध अपनी स्वाभाविक अवस्था में भैंस की अपेक्षा अधिक उपयुक्त होता है स्नेह पदार्थ की गोलियां छोटी, असंख्य तथा गुप्त रूप से प्रोटीन युक्त होने के कारण गोदुग्ध स्नेह एवं प्रोटीनों को पचाने के लिये सुगम और हल्का बना देती हैं।

हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गोडबोले साहब जो वर्षों देश और विदेश में इस विषय का अनुसंधान करते रहे हैं। अपनी सम्मति इस विषय में यह प्रकट करते हैं।

कार्बोहाइड्रेट, फैट अल्बुमिनाइड, क्षार, तथा विटामिन होने के कारण दूध-विशेषकर मां और गाय का—प्रौढ़ एवं बच्चों के लिये आदर्श भोजन है।

२—गाय और भैंस, दोनों के दूध में गाय का दूध मानुषिक-शरीर रचना द्वारा सुगमता से पच जाता है। इसलिये अधिक पोषक है।

३—औषधि की दृष्टि से भी गाय और बकरी का दूध उत्तम होता है। इसी प्रकार गाय के घी के विषय में नवीन खोज से वैज्ञानिकों का मत इस प्रकार है।

१—गोघृत में आयोडीन (Iodine) रहता है (यह वह पदार्थ है जिससे मनुष्य में काम करने का उत्साह और फुर्ती आती है) भैंस के घी में यह चीज़ नहीं है।

२—दोनों के घी में विटामिन 'ए' और 'डी' होते हैं। पर गाय के घी में विटामिन 'ए' बहुत अधिक होता है। और भैंस के घी में

'डी'। विटामिन 'ए' वह पदार्थ है जिससे आँख की दृष्टि शक्ति और मस्तिष्क को अधिक बल मिलता है।

३—सम्पूर्ण अंश में पच जाने तथा घुल जाने की दृष्टि से गाय का घी भैंस की अपेक्षा अधिक सम्पन्न होता है : और सब चिकनाइयों में श्रेष्ट है।

इसी प्रकार मक्खन मलाई सब ही वस्तुऐं गोदुग्ध से निकाली हुई सर्वश्रेष्ट हैं। मक्खन में भी बिटामिन ए और डी रहता है गाय का मक्खन बहुत सुगमता से पचता है। मक्खन निकले दूध में जीवन तत्वों का अभाव रहता है (देखो लीग आफ नेशन्स की रिपोर्ट सं० १६३८ पृष्ट ८६)

मक्खन निकले दूध का चूर्ण तय्यार कर के जो डिब्बे तय्यार किए जाते हैं यह रोगों का घर हैं। इनका प्रयोग महा हानिकारक है। मुफ्त मिलने पर भी यह बहुत मंहगे दामों में पड़ते हैं। और गाय के दूध के भी हानिकारक हैं।

पशु के रंग का प्रभाव भी उसके दूध पर पड़ता है। यहां गाय के सम्बन्ध में कुछ प्रकाश डाला जाता है :—

(५) गायों के रंग का प्रभाव उनके दूध परः—काली श्यामा गाय का दूध त्रिदोष नाशक और विशेष रूप से वातनाशक होता है। लाल और चितकबरी गाय का विशेष रूप से पित्तनाशक होता है। पीली गाय का विशेष रूप से वात और पित्तनाशक होता है। श्वेत गाय का वात, पित्त का नाशक होता है पर कफ की कुछ वृद्धि करता है। यदि कफ प्रकोप वाले को श्वेत गाय का ही दूध पीना पड़े तो गरम २ दूध मिश्री और काली मिर्च मिलाकर पीना चाहिये।

(६) गाय के दही ने गुणः—पाक में मधुर होता है भोजन में शरीर को पुष्ट करता है, भूख बढ़ाता है, रुचि उत्पन्न करता है, अग्नि को दीप्त करता है, शरीर में चिकनाई उत्पन्न करना है और वायु को शान्त करना है।

(७) भैंस के दही के गुण:—विशेष स्निग्ध होता है। और शरीर में चिकनाई अधिक उत्पन्न करता है। और कफ बढ़ाता है। पर वात और पित्त को शांत करता है। अभिष्यन्दी है। अर्थात भीतर की नसों के स्रोत्रों को बन्द करता है। इससे नसों में एक प्रकार का चूना सा जमा हो जाता है। जिससे नसें कड़ी पड़ जाती हैं और उनका लोच जाता रहता है। किन्तु यह वीर्य बढ़ाता है। पचता बहुत देर में है रक्त में विकार उत्पन्न करता है। इससे कुछ रोग विशेषकर उनलोगों में जिनका रक्त दूषित है उत्पन्न हो सकते हैं।

(८) गाय के मट्ठा के गुण:—दही से भी अधिक उपयोगी मट्ठा होता है। यह त्रिदोष और बवासीर का नाश करता है। नसों को खोल देता है। इस कारण तपेदिक (T. B.) के रोगी की बहुत अच्छी औषधि है। मठा दही से हल्का होता है। आयुवर्धक है। शीघ्र पचता है भूख बढ़ाता है और अग्नि को भी खूब बढ़ाता है। बवासीर अतिसार तथा संग्रहणी के रोग बिना किसी अन्य औषधि के केवल मठा से अच्छे हो सकते हैं इस विषय में बकरी का मठा भी गाय के समान ही गुण रखता है। जिन रोगों में दही नहीं दिया जाता कहीं २ मठा उनमें भी दिया जा सकता है। जैसे ज्वर व आमवात। अब विदेशों में दही और मठा के परीक्षण होने से कुछ डाक्टर लोग भी मैलेरिया इत्यादि में खूब दही बताने लगे हैं पर जो लोग गाय और भैंस के दही का अन्तर नहीं समझते उन को कभी २ हानि भी उठानी पड़ती है। पाठकों को जान लेना चाहिए कि विदेशों में केवल गाय के डेरी फार्म प्रायः बनाए जाते हैं और प्रायः सब परीक्षण गाय के दूध के आधार पर किए जाते हैं।

(९) घी के गुण:—चरक ने घी के गुण इस प्रकार लिखे हैं—घी, स्मृति, बुद्धि, अग्नि, वीर्य, ओज, कफ और मेद को बढ़ाता है। वात, पित्त, विष विकार, उन्माद, शोष (T. B.) अलक्ष्मी

(निर्धनता) को नष्ट करता है। (इस कारण भी गाय को गोधन कहते हैं)। सम्पूर्ण स्नेहों में उत्तम है तथा रस विपाक में मधुर है। सहस्त्रों द्रव्यों के संयोग से अलग अलग संस्कार किया हुआ घी सहस्त्रों गुणवाला होता है। और लगभग सब ही रोगों को नष्ट कर सकता है। (खाने, लगाने के अतिरिक्त गोघृत से हवन करने से भी समस्त रोगों के कीटाणु का नाश होता है और आँख की ज्योति बढ़ती है देर तक हवन करने से भूख बढ़ती है लेखक।) निघंटु में घी के गुण इस प्रकार वर्णन किए हैं :—

घी, रासायन, मधुर, आँख के लिए हितकर, अग्निवर्धक, शीत वीर्य, अल्प अभिष्यन्दी. कान्ति वर्धक, ओज वर्धक, तेज वर्धक लावण्य वर्धक, बुद्धि वर्धक, स्वर वर्धक, स्मृति वर्धक, मेधा वर्धक, आयु वर्धक, वल वर्धक, शक्ति वर्धक, चिकना, कफ वर्धक, कीटाणु नाशक है और वह विष, अलक्ष्मी, पाटम, पित्त, वायु, उदावर्त, ज्वर, उन्माद, आनाह, व्रण, क्षय, विसर्प और रक्तदोष को दूर करता है एक वर्ष का पुराना घी यों खाने के काम का तो नहीं होता पर औषधि के साथ मिलकर श्वांस, खांसी, तिमिर, पीनस और (पुराने) ज्वर को दूर करता है। मूर्च्छा, कोढ़ विष रोग उन्माद और मृगी, का नाशक है। १० वर्ष का पुराना और भी गुणकारी है गोघृत की जितनी भी प्रशंसा की जावे थोड़ी है। ऊपर वताया ही जा चुका है कि गोघृत से हवन करने से बुढ़ापे में नेत्र ज्योति इतनी वढ़ी कि ऐनक लगाना छूट गया जबलपुर टी० बी० सेनेटरीयम में गोघृत के हवन से शीघ्र और भैंस के घी से देर में लाभ होते तथा वनस्पति से हानि होते स्वयं हमने देखा है।

१०—गाय का गोवर व मूत्र—आयुर्वेदिक शास्त्र में तो प्राचीन काल से ही गोवर के वैज्ञानिक गुणों पर भली प्रकार प्रकाश डाला ही गया है। पर आधुनिक खोज जो कभी गोवर से लीपने को रोग उत्पादक मानती थी अब उसके गुण समझती जाती है।

११—हैज़ा—अंग्रेजी काल में एक अंग्रेज डा० किंग साहब मद्रास में सेनेटरी कमिश्नर थे वह अपने परीक्षण इस प्रकार लिखते हैं :—

"यह अब प्रयोग से सिद्ध हो चुका है कि गाय के गोबर में हैज़ा के जन्तुओं को संहार करने की विचित्र शक्ति है। गाय के गोवर का वैज्ञानिक रीति से प्रथकरण कर उसका सत्व निकाल कर जहां २ पानी में डालकर देखा गया वहां की घनी वस्ती में भी कहीं पर हैज़ा नहीं हुआ। सं० १६३४ ई० में मद्रास में हैज़ा का प्रकोप हुआ। उस समय जो लोग गोवर के गारों में काम करते थे उन पर हैज़ा का प्रकोप नहीं हुआ।" इत्यादि

(क) इटली में अब भी रिवाज है कि हैज़ा और अतिसार में ताज़े पानी में ताज़ा गोबर घोल कर पिलाते हैं। और जिस तालाब में हैज़ा के कीड़े हो गए हों उस में गाय का गोबर घोल देते हैं। उनका यह अनुभव है कि इस से हैज़ा के कीड़े मर जाते हैं।

१२—आग से जले पर—आग से जला या चोट का घाव गोवर वांधने से अच्छा हो जाता है।

१३—खुजली और चकत्ते—खुजली चकत्ते आदि रोग गोवर और गो मूत्र मलकर कुछ समय धूप में बैठ कर पश्चात स्नान करने से अच्छे होते हैं। खुजली में कड़वा जीरा गो मूत्र में पीस कर मलने और कुछ देर पश्चात गोवर मल कर स्नान करने से और भी शीघ्र लाभ होता है।

१४—तपेदिक व मलेरिया—इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो० जी०इ० वीगेंड ने अनुभव से सिद्ध किया है कि ताज़े गोवर से तपेदिक़ और मलेरिया के जन्तु तुरन्त मर जाते हैं। उनका अनुभव है कि प्राथमिक अवस्था के कीड़े तो गोवर की गन्ध से ही मर जाते है। इसी कारण वहां के बहुत से सेनेटोरियम गाय के गोवर से लीपे जाते हैं।

(क) मेरे पूज्य भ्राता जी ने बताया कि एक शाह साहब गाय

के गोबर से तपेदिक़ की चिकित्सा करते थे। उनका तरीक़ा यह था कि रोगी को अपने पास रख कर अपने यहां पाली हुई अनेकों गौओं का गोबर रोगी के हाथों से उठवाया करते थे। जिससे धीरे २ रोगी आरोग्य होता जाता था। (सम्भव है उन गायों को कुछ विशेष औषधियां खिला कर उनका दूध, मठा रोगी को पिलाते हों)

(ख) लेखक को एक ऐसे साधन हीन बिगड़े रईस रोगी की चिकित्सा का अवसर मिला जिस के पास एक पैसा भी औषधि पर खर्च करने को नहीं था। पर सौभाग्य से पिछली सम्पत्ति का शेष धन दूध देती गाय शेष थी। उसे दूध, मठा का प्रयोग, गोघृत से हवन तथा ऊषा काल का भ्रमण बताया गया इसी से वह पूर्ण स्वस्थ्य होगया।

(ग) लखनऊ के एक प्रसिद्ध डाक्टर पुराने बुखार के रोगी को सेरों दही खाने का परामर्श देते थे। तपेदिक़ चिकित्सा की पूर्ण विधि इस मंडल के अंत में देखें।

१५—कब्ज़ व अफ़रा—जब कब्ज़ के कारण पेट फूल गया हो। डकारें आती हों, जी मिचलाता हो तो तीन तोला स्वच्छ छना हुआ ताज़ा गोमूत्र और आधा माशा काला नमक मिला कर पिला दो। थोड़ी देर में शौच होकर पेट ठीक होजावेगा। एक वर्ष के बालक को एक चम्मच ही ठीक है। अफ़रा में गोमूत्र का सेंक फ़ोमनटेशन के तरीके पर करें विधि आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा में देखें।

१६—पेट के कृमि—२ तोले गोमूत्र, चने बराबर "डीका माली" मिलाकर प्रातःकाल पिलाने से एक सप्ताह में कीड़े मर जाते हैं।

१७—डब्बा—इस रोग से बच्चे का शरीर फूल जाता है, पेट बढ़ जाता है। और नाभी ऊपर आजाती है।

चिकित्सा—बच्चे की दो मुट्ठी भर कर कुल्थी लें और उसमें बच्चे की हथेली के बराबर आक का पत्ता डालें। फिर उसे आध सेर पानी में पकावें। जब एक छटांक से कुछ कम रह जावे आधी चम्मच काढा

बराबर का गो मूत्र ताज़ा मिलाकर दिन भर में थोड़ा २ पिला दें। तीन दिन में ही टट्टी व पेशाब साफ होकर पेट उतरने लगता है। और सात दिन में अवश्य आराम हो जाता है।

१८—उदर रोग यकृत इत्यादि—पेट की हर एक व्याधि पर गोमूत्र रामबाण है। इसका गुण सौम्य और रेचक है। यकृत व तिल्ली बढ़ गई हो तो ५ तोला गोमूत्र थोड़ा नमक मिलाकर प्रतिदिन पिलाने से आराम हो जाता है। शीघ्र प्रभाव करने को सेंक भी करें। उसकी विधि यह है कि एक ईंट गरम कर उस पर गोमूत्र डाल कर गोमूत्र से भिगोय कपड़े में लपेट कर सेकें या फोमनटेशन करें

१९—यकृत या तिल्ली के पुराने रोग पर—१ तोला पुनर्नवा को आध पाव पानी में औटावें। जब $\frac{1}{4}$ रह जावे तब बराबर का गो-मूत्र मिला कर पिला दें। आरोग्य होने तक नित्य पिलावें।

२०—पुराना चर्म रोग छाजन इत्यादि—त्रिफला का चूर्ण २ माशे प्रातःकाल निहार मुँह तथा सोते समय एक-दो छटाँक गो-मूत्र के साथ खिलावें और कष्ट के स्थान पर गोबर व गो-मूत्र लगावें।

२१—कान बहना व कान का दर्द—कान के दर्द में गोमूत्र गरम करके सेंधा नमक मिलाकर डालें। पीव बहने पर पहले कान में एक चुटकी समंदर फेन बारीक पिसा डालें और ऊपर से २-३ बूंद नीबू का अर्क ठंडा या गरम जैसा भी रोगी को पसन्द हो डालें। जब झाग आ जावें। रूई से साफ कर दें। फिर उपरोक्त विधि से गोमूत्र डालें।

२२—श्वेत कुष्ठ—सफेद दागों पर गो मूत्र में बावची को पीसकर रात में दागों पर लेप कर दें और प्रातःकाल ताजे ताजे गो मूत्र से धो डालें। जब तक दाग मिट न जावें करते रहें।

२३—जलंधर (Dropsy)—५-५ तोला गो-मूत्र १-१ तोला मधु के साथ दिन में ३ बार पिलावें। और भोजन में केवल गोदुग्ध मधु मिलाकर दें। दूध धरोष्ण हो तो और भी अच्छा है।

यदि पानी अधिक भरा हो स्वाँस लेने में कष्ट होता हो तो एक बार किसी सिद्धहस्त डाक्टर से पानी निकलवा कर चिकित्सा करें।

२४—प्रसूति—प्रसूता स्त्री को १-१ तोला गोमूत्र पिलाने से शरीर शुद्ध होता है और गर्भाशय की सूजन इत्यादि सब दूर होजाती है।

२५—पेट की सूजन—किसी रोग के परिणाम स्वरूप पेट पर अथवा सारे शरीर पर सूजन आजावे और यकृत काम न करता हो तो रोगी को उसकी शक्ति के अनुसार २ तोले से लेकर ५ तोले तक दिन में तीन बार गो मूत्र पिलावें। और भोजन में गाय का धारोष्ण दूध मधु मिलाकर दें।

गो मूत्र की वैज्ञानिक जांच से पता चला है कि इसमें मेनथल (Menthol) अमोनिया (Ammonia), फ़िनोल (Phenol), इंडोल (Indol) और फ़ार्मेलिन (Formelin) होते हैं। इसी कारण इससे रोग कृमि नष्ट होते हैं। यह आधुनिक खोज है। प्राचीन ग्रन्थ सुश्रुत में गाय के मूत्र के गुण इस प्रकार वर्णन किये हैं :—

चरपरा, तेज़ और गरम होना है। खारी होने के कारण वात नहीं करता, हलका होता है। पाचन शक्ति और अग्नि को बढ़ाता है। बुद्धिवर्धक है। पित्त उत्पन्न करता है। कफ़ और वात दूर करता है। शूल, गुल्म, उदर रोग और अफ़ारे को दूर करता है। क्षत को साफ़ करता है। कृमि, सूजन, मेद तथा विष रोग, बवासीर, अरुचि व पाण्डु रोग को दूर करने वाला है इत्यादि।

२६—भोजन में स्वाद—पृथ्वी में गोमूत्र तथा गोबर मिलने से एक विशेष गन्ध उत्पन्न होती है जो उस भूमि में उगने वाले पदार्थों में एक विशेष स्वाद उत्पन्न करती है।

२७—भयानक क्षय रोग की अचूक चिकित्सा—क्षय तपेदिक़ टी०वी० पुराना बुखार, खांसी, फेफ़ड़े आँत इत्यादि में क्षत होना इत्यादि सब ही रोग आजकल के प्रचलित शब्द टी०वी० के अन्तर्गत हैं जिसकी चिकित्सा हर एक चिकित्सक का काम नहीं। लेखक ने अपने लगभग

५० वर्षीय अनुभव से टी० बी० की अचूक चिकित्सा पर "यज्ञ चिकित्सा" और सब ही रोगों की चिकित्सा पर "आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा" नामी पुस्तकें लिखी हैं जिन पर सरकार से लेखक को पुरस्कार भी मिला है। उन दोनों पुस्तकों को इस रोग की चिकित्सा आरम्भ करने से पूर्व अवश्य पढ़ लेना चाहिए और फिर ईश्वर पर विश्वास करके श्रद्धापूर्वक जम कर चिकित्सा करनी चाहिए। नीचे जो बिधि लिखी है वह संकेत मात्र है पर उपरोक्त पुस्तकें पढ़ने के पश्चात सब ही संकेत और बिधि समझ में आ जावेंगे। इस बिधि की विशेषता इसकी सरलता या सस्तापन नहीं है किन्तु इसका अचूकपन है। सेनेटोरीयम में इसका परिणाम ८०% रह चुका है और शेष २०% वह रोगी थे जो बीच में किन ही अपनी असुविधाओं के कारण अनिच्छा से चले गए। वैसे चिकित्सा में रहते हुए एक रोगी भी सेनेटोरीयम में नहीं मरा। संसार भर में यह गौरव केवल यज्ञ-चिकित्सा के सेनेटोरीयम को ही प्राप्त है।

विधि के संकेत—

१—प्रथम रोगी के बल और शक्ति का विचार करके वस्ती कर्म और उपवास अथवा अर्ध-उपवास से काम लें।

२—रोगी की शक्ति अनुसार गंगा स्नान, टब बाथ, रीढ़ की पट्टी मिट्टी व पानी की पट्टी से काम लें।

३—रोगी का कमरा नित्य प्रति गाय के ताजे गोबर से लिपवावें। और यदि सम्भव हो तो गाय का गोबर रोगी से उठवावें। या उसके हाथ कई वार साबुन के स्थान में गोबर से साफ करावें।

४—कुछ समय ऐसे स्थान पर रोगी को रक्खें जहां गाय के गोबर मूत्र करते समय उन की गन्ध रोगी तक पहुँच सके और गाय की स्वांस की गन्ध भी रोगी को मिले।

५—यज्ञ चिकित्सा पुस्तक के अनुसार रोगी को भोजन कराते हुए गाय का दूध और मठा पर्याप्त मात्रा में उसकी पावन शक्ति का

विचार करते हुए देवें ।

६—रोगी को २४ घंटे शुद्ध ओषजन युक्त वायु में रक्खें । और गृह की वायु शुद्ध करने और फेफड़ों के क्षत शीघ्र भरने तथा वायु मंडल से रोग विष दूर करने को गोघृत, तथा गूगल युक्त तपेदिक़ नाशक हवन सामग्री से नित्य प्रति विधि अनुकूल हवन यज्ञ कर के अपने किए पापों का रोगी प्रायश्चित करे ।

७—रोगी अपने मन से काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ईर्ष्या द्वेष इत्यादि कुभावनाओं को हटाता हुआ चित्त को निर्मल और एकाग्र करता हुआ सर्वदा साथ रहने वाले आनन्द के सागर में स्नान करता हुआ सर्वदा प्रसन्न और शान्त रहे । ईश्वर ध्यान में मस्त रहे ।

अब अगले मंडल में यह बताया जावेगा कि ऐसी उपयोगी गऊ की देश में अवस्था क्या है ।

मण्डल ५

देश में गऊ की अवस्था

इतिहास और पशुगणना के आधार पर

महाराज राम ने अपने जीवनकाल में दस सहस्र करोड़ अर्थात एक खरब गौएं विद्वानों को दान की थी, (देखो वाल्मीकि रामायण (१-१-६४)

भगवान कृष्ण प्रतिदिन तेरह हजार चौरासी गौएं दान करने के पश्चात भोजन किया करते थे (देखो भाग० अ० १० श्लो० ७०) इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय देश में कितनी गाएें रही होवेंगी । उसी समय हमारा देश सर्व शिरोमणि होने से संसार का गुरू था क्योंकि हर मनुष्य का विशेष भोजन दूध माखन था । प्रातः के जलपान में माखन मिश्री का उल्लेख तो पुस्तकों में मिलता है पर चाय, पकौड़े और कबाब का कहीं नाम निशान नहीं मिलता

हमें गुरू बनाने का कारण अमेरिका के डाक्टर बेंक फील्ड के मतानुसार गोदुग्ध और मक्खन का अधिक प्रयोग ही था।

अब से केवल २५०० वर्ष पूर्व महाराज चन्द्रगुप्त के समय की जन संख्या १८ करोड़ थी और उस समय गाएँ ३६ करोड़ थीं। जब तक विदेशी शासक हमारे देश में नहीं आए प्रत्येक देशवासी गौहत्या को महान पाप समझता था और जब तक हम निरामिष भोजी रहे कभी विदेशी शासन को हमने अपने ऊपर स्वीकार नहीं किया। मुसलमान शासकों में से भी कुछ समझदार बादशाहों ने गो बध कानूनन बंद रखा। पर कुछ मूर्खों ने पराई बदशगुनी को अपनी नाक कटवाने में ही अपने राज्य की नींव खोखली की। अतः गौ हत्या के पाप से वह सर्वदा के लिए नष्ट हो गए।

मुसलमान शासक गोहत्या प्रायः साम्प्रदायिक भावना से करवाते थे मासांहारी और प्रायः विषयी होने के कारण राजनैतिक गहरी नीति को कम समझ पाते थे। इस कारण गायों की संख्या केवल इतनी घटी की सं १८७१ ई० में गाएं भैंस मिलाकर ३६ करोड़ रहीं। शासन सूत्र भी मुसलमानों के हाथ से निकल कर हिन्दुओं के हाथ आगया। पर उस समय के हिन्दू गोभक्त होने पर भी बकरे इत्यादि का मांस खाने लगे थे तथा विलासी भी बन चुके थे। अतः अंगरेज़ों की राजनीति की चालें काम कर गईं और वह बन्दर बाँट के उपाय से भारत जैसी सोने की चिड़िया को पाकर यहां के राजा बन बैठे। अंगरेज़ मांसाहारी होने के साथ मक्खन भी खाते थे। साथ ही इन को नीति बताने वाले कुछ संयमी निरामिष भोजी भी थे। कुछ देश-द्रोही स्वार्थी भारतीय भी उनके चुंगल में फंस गए थे। अतः अंगरेज़ों ने भारत को सर्वदा निर्बल, निर्धन, और मूर्ख बनाए रखने के विचार से और भारत के धन से अपने देश को मालामाल करने की नीयत से खूब गोवध कराया। इस विषय में अंगरेज़ सरकार की नीति शुद्ध न होने के दो प्रमाण हम यहां उपस्थित करते हैं।

प्रथमः—भारत के उद्धारकर्ता ऋषि दयानन्द जी महाराज जब गऊ की उपयोगिता दिखा कर उसका वध बंद कराने के अभिप्राय से उस समय के अंगरेज़ शासक से मिले तब शासक महोदय उन की अकाट्य युक्तियों को तो न काट सके, पर इस विषय में अपनी असमर्थता प्रकट की, जिसका साफ़ अर्थ यह है कि गऊ बध जैसे भीषण और हानिकारक कार्य में कोई गुप्त नीति काम करती थी। (देखो जीवन चरित्र ऋषि दयानन्द जी महाराज)

द्वितीयः—संसार को भ्रम में डालने के विचार से सं १९३६ ई० में वाइसराय महोदय ने डाक्टर एन० सी० राइट को बुलाया था, जिन्होंने पूरे अन्वेषण के पश्चात और अपने पूर्व के विशेषज्ञों की रिपोर्ट के आधार पर सितम्बर सन ३७ में यह सिफारिश की थी कि बच्चों को मुफ्त दूध दिया जावे क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे तोल और ऊंचाई दोनों में दूध न पीनेवाले की अपेक्षा निश्चयपूर्वक अधिक उन्नति कर सकते हैं। यह उन्नति प्रत्येक ३ महीने में तोल में ४ पौंड और ऊंचाई में एक इंच के हिसाब से होती है। (देखो रिपोर्ट पृष्ठ ५ एपेंडिक्स ४. पृष्ठ १४४, टैं बिल न० ४ पृष्ठ १५७) पर वाइसराय महोदय का हृदय परिवर्तन न हुआ और भारत के निर्बल बच्चों पर उन की करुणा दृष्टि नहीं गई और गऊ हत्या का निर्मम और विनाशकारी कार्य बराबर जारी रहा जब कि अपने देश इंगलैंड की कुछ जनता को जैसा कि अन्यत्र उल्लेख है मुफ्त दूध बट रहा था और गऊ रक्षा कर के अपने देश में दूध बढ़ाया भी जा रहा था तथा उस के गुणों का प्रचार भी किया जा रहा था। उसके स्थान में भारत में चाय जैसी हानिकारक वस्तु का प्रचार हो रहा था। इन सब ही बातों से गुमान होता है कि अंगरेजी सरकार का उद्देश्य हमें निर्बल और रोगी बनाए रखने के विचार से ही हमारे देश में गऊ जैसी उपयोगी पशु की हत्या करना था। इन मृत गौओं का मांस गोरों की

फौज को भेजा जाता था और भारत में अंगरेजी भाषा और सभ्यता का प्रचार कर के तथा मनमाना झूठा इतिहास पढ़ा कर कुछ पढ़े लिखे भारतीयों के हृदय से सच्चे देश और धर्मप्रेम की भावना ही मिटाई जाती थी। उन्हें बताया गया तुम भी हमारी भांति बाहर से आए हो। फिर देशप्रेम कैसा? तुम्हारे पूर्वज गऊ मांस खाते थे फिर गोवध पर आक्षेप कैसा? तुम चमड़े के जूते छू कर धार्मिक कट्टरता क्यों दिखाते हो? तुम्हारे पूर्वज तो चमड़े के वस्त्र पहनते थे। फलस्वरूप चमड़ा लगा टोप, चमड़े के बक्स, चमड़े की छड़ी चमड़ा लगी घड़ी, इत्यादि अनेकों चमड़े की चीजें भारतीय स्वयं प्रयोग करने लगे जिससे चमड़े का मूल्य बहुत बढ़ गया। इस लालच से सैकड़ों भारतीय स्वयं गोबध के कार्य में सहायता देने लगे। परिणाम-स्वरूप सं १६२० ई० में गायों की संख्या ४३३६०००० रह गई और फिर सं १६४० ई० में और घट कर केवल ३६४६०००० ही रह गई। सं १६४७ ई० में जब अंगरेजों ने भारत छोड़ा तो भारत में गाय भैंस मिलाकर चार करोड़ के लगभग रह गईं। स्वराज्य होने पर उच्चकोटि के नेताओं के वचनों के अनुसार जनता इस प्रतीक्षा में थी कि स्वराज्य के साथ ही गोवध निषेध की घोषणा होगी। पर अब तक ऐसा नहीं हुआ इसके परिणाम स्वरूप आज देश में घी, दूध, अंगरेजी काल की अपेक्षा भी बहुत अधिक महंगा है। जो दूध अकबर के समय १) का सवा मन और अंगरेजी काल में महायुद्धों से पूर्व १६ सेर तक और युद्ध के पश्चात भी ५ सेर से अधिक मिलता था वह आज बारह आने और रुपये सेर तक मिलता है। और घी तो ५) सेर भी शुद्ध मिलना कठिन है। गोघृत तो औषधि रूप में भी सबको नहीं मिलता। तपेदिक़ की यज्ञ चिकित्सा के अचूक प्रभाव को देख हजारों रोगी चिकित्सा कराना चाहते हैं पर गोघृत प्राप्त न होने से तड़प २ कर मरते हैं। इस अभाव का मुख्य कारण अब भी गोवध होना और हमारा गोवंश सुधार की ओर ध्यान न देना है। पत्रों

की यदि यह खबर सत्य है कि सं १९४६-४७ में गायों की खालें ४० लाख की संख्या में बाहर भेजी गईं थीं, उस समय अंग्रेज का शासन था, अब हमारे स्वराज्य में १९५५-५६ ई० में वही खालें ८० लाख भेजी गईं हैं, जब कि कई राज्यों में गोवध निषेध का कानून बन चुका है, तो हमारी जनता की सरकार का कर्त्तव्य है कि वह पता लगावे कि इतनी उपयोगी राष्ट्र की सम्पत्ति का इस प्रकार नाश कैसे हुआ। यदि राष्ट्र हित का ध्यान न कर किन ही हत्यारों ने कानून भंग किया है तो उन को ऐसा कड़ा दण्ड मिलना चाहिए कि भविष्य में कोई भी ऐसी मूर्खता करने का साहस न कर पावें। यदि वह अपनी मौत से मरी हैं तो इसका अर्थ यह है कि देश में चारा और चरागाह की कमी है तथा लोग गऊ की उपयोगिता से अनभिज्ञ हैं जिसका प्रबन्ध सबसे पहिले होना चाहिए। रेडियो वाटर-वर्क्स इत्यादि के बिना कोई हानि न होगी पर गोधन और गोदुग्ध न बढ़ा तो हम सब ही निर्बलता और क्षय इत्यादि रोगों से समाप्त हो जावेंगे। कुछ पढ़े लिखे विद्वान सज्जन भी अंग्रेजों से पढ़े पाठ का न भुलाकर गौरक्षा को साम्प्रदायिक चीज समझते हैं। यह भारी भ्रम है। अगले मण्डल में हम इस विषयपर प्रकाश डालेंगे कि यह साम्प्रदायिक कदापि नहीं।

मण्डल ६

गऊ रक्षा का प्रश्न पूर्ण राष्ट्रीय है

सब मत के आचार्य इसके पक्ष में हैं

वेद, रामायण महाभारत, भागवत के प्रमाण इसी पुस्तक में उपस्थित किए जा चुके हैं। जब तक ईश्वर दत्त धर्म वेद का प्रचार रहा उस समय कोई सम्प्रदाय नहीं था क्योंकि वेद के अनुसार आचरण करने वाले धर्मात्मा आर्य अथवा वैदिक धर्मी कहलाते थे

और इस के विरूद्ध आचरण करने वाले राक्षस, दस्यु आदि नाम से पुकारे जाते थे। आर्य लोग अपने को वेद के अनुसार ईश्वर पुत्र मानते थे और यम (अहिंसा, सत्य अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह) तथा नियम (शौच, सन्तोष, तपः स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान) के अनुसार जीवन बिताते हुए विशेष रूप से गोदुग्ध का भोजन करते थे घी के बिना रसोई छूत मानी जाती थी और यह लोग गाय को अघ्नया (न मारने योग्य) समझ कर उस की रक्षा को तो परम धर्म मानते ही थे। किसी भी जीव को मारना अथवा कष्ट पहुंचाना अपने धर्म के विरुद्ध समझते थे। जो ऐसा न कर किसी जीव को सताता, मांस खाता, शराब पीता, झूट बोलता, चोरी, व्यभिचार इत्यादि करता उसे ही वह राक्षस कहते थे। फिर "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के सिद्धान्त पर वह प्रत्येक व्यक्ति को धर्मात्मा अथवा आर्य बनाने का यत्न करते थे। पर पापी को पाप का दण्ड देने और गऊ ब्राह्मण के मारने वाले को आतताई कह कर राजा लोग मार डालने में भी पाप नहीं समझते थे ।

आदि सृष्टि से लेकर अब से ढाई सहस्र वर्ष पूर्व तक किसी सम्प्रदाय का उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में नहीं मिलता। इसके पश्चात "वाम मार्ग" अर्थात् वेद विरुद्ध मत का उल्लेख मिलता है जो मांस मछली खाना, मदिरा पीना, माता और भगिनी से भी विषय करना, यज्ञ में मांस डालना धर्म समझते थे। यहां से ही मत, मजहब या सम्प्रदाय का आरम्भ होता है। जब इनके यह पाप कर्म बढ़े और यज्ञ में पशुओं का बहुत बलिदान होने लगा तब एक आर्य राजा के पुत्र गौतमबुद्ध ने इन पापों को रोकने का अपना एक दूसरा सम्प्रदाय चलाया जिसका नाम बौद्ध मत है। वाममार्गियों ने अपने पाप कर्म को वेद विहित सिद्ध करने को वेद के मनमाने ऊट पटांग अर्थ किए थे और बुद्ध भगवान वेदों के पंडित नहीं थे जो ठीक अर्थ करके उनको परास्त कर सकें। अतः उन्होंने ईश्वर कृत

वेद का सहारा छोड़ केवल तर्क से काम लिया। फिर भी वैदिक धर्म के कुछ सिद्धान्त यम इत्यादि का पंचशील का नाम दिया जिन पर आचरण करना उन के मत में आवश्यक था। उन के शिष्यों ने फिर जो परिवर्तन अपने मत में किए और आज के बौद्ध क्या आचरण करते हैं इस पर विवाद करना इस पुस्तक का विषय नहीं है पर बुद्ध भगवान के पंचशील में आज भी अहिंसा का सिद्धान्त अनिवार्य है और बुद्ध भगवान ने गऊ तथा प्राचीन ऋषियों के विषय में जो सम्मति प्रगट की है वह हम उनके ही शब्दों में यहां लिखते हैं:—

"पूर्व के ऋषि ब्रह्मचर्य शील, सरलता, नम्रता, तप, मृदुता, करुणा और क्षमा इन गुणों की प्रशंसा करते थे, चावल, शय्या, वस्त्र, घी, की याचना करके धर्म के अनुसार उन का विभाग निकाल कर वे यज्ञ करते थे। यज्ञ के उपस्थित होने पर वे गौ को मारते नहीं थे। माता, पिता, भाई और अन्य बान्धवों के समान ही गौओं को वह अपना परम मित्र जानते थे, उन से (गऊ से) ओषधि निर्माण होती है (अर्थात गऊ का दूध इत्यादि ओषधि है) वे अन्न, बल रूप, और सुख देती हैं" (देखो बौद्ध ग्रन्थ ब्राह्मण धम्म सुत)

और भी कहा है:—"सब गृहस्थों को भोग (भोग्य पदार्थ) देने वाली गौ, बैल ही हैं। इस लिये माता पिता के समान उन्हें पूज्य माने और उस का सत्कार करें। जो गौ मांस खाते हैं वे अपनी माता का मांस खाते हैं" (देखो लोकनीति ७)

७—महावीर स्वामी:—बुद्ध भगवान के समकालीन महावीर स्वामी हुए हैं उनकी गो भक्ति इतनी बढ़ी हुई थी कि आनन्द को उन्होंने जब श्रावक व्रत दिया तो उनसे ८ गोकुल अर्थात ८० हजार गौएं पालने की शपथ ली थी। १० हजार गौओं की संख्या को एक गोकुल कहते हैं। मथुरा जिले में जो गोकुल ग्राम है उस का अर्थ यह है कि इस का जब नामकरण किया उस समय उस

ग्राम में दस दस हज़ार गौएं रखने वाले आकर बसे थे। क्या महावीर स्वामी के उपासक आज एक भी महावीर गोकुल बसाने का यत्न करेंगे जिसकी इस समय देश को बड़ी आवश्यकता है ?

३—महाराज हर्ष वर्धन :—उस समय के विदेशी यात्रियों ने लिखा है कि महाराज हर्ष के समय किसी भी जीवधारी को मारने की आज्ञा भारतवर्ष में नहीं थी। फिर गोवध कैसा ! हमारी अहिंसा वादी सरकार विचार करे कि महाराज हर्ष गान्धी जी के आदेशों का पालन करते थे या हम पालन करते हैं।

४—स्वामी शंकराचार्य :—जब देश में महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी के शिष्य जैनी भाई अपने २ आचार्यों की नीति तथा वैदिक धर्म के सिद्धान्त विरुद्ध आजकल के अंग्रेज़ों से बहकाए कुछ सिक्ख भाइयों की भांति अपने को हिन्दुओं (आर्यों) से पृथक् समझ कर ईश्वर तक का विरोध करने लगे तब उनको सत्मार्ग अर्थात् वैदिक मार्ग पर लाने को भगवान ने श्री स्वामी शंकराचार्य को भेजा जिन्होंने बाल ब्रह्मचारी रह कर वैदिक धर्म का प्रचार किया और नास्तिकता का ज़ोर देख कर ईश्वर, जीव, प्रकृति तीन अनादि पदार्थों में से ईश्वर के अस्तित्व पर अधिक बल दिया। वह आर्य थे और गऊ को अघ्न्या मानते थे। उन के अनुयायी आज भी चाहें कितनी ही अन्य बातों में वैदिक धर्म के सिद्धान्त का विरोध करते हों पर गऊ के वैसे ही भक्त हैं और गौ रक्षा पर अपना तन, मन, धन, सब कुछ निछावर करने को उद्यत पाए जाते हैं।

५—ईसा मसीह अथवा ईसाई मत :—बाइबिल में बताया है "दूध और मधु सुन्दरता के मूल हैं" इंजील में लिखा है बैल और मनुष्य को मारना एक समान है। ईसामसीह महाराज ने स्वयं कहा है "तू किसी को मत मार; तू मेरे समीप पवित्र मनुष्य होकर रह। संसार के प्राणियों को वध कर के उन का मांस मत खा" आज ईसामसीह के अनुयायी यदि अपने नेता की बात मानें तो

संसार से जहां करोड़ों पशु पक्षियों का बध बंद हो जावे वहां मनुष्यों का बध भी बंद होजावे और हमारे नेहरू जी का पंचशील सफल होजावे। खैर यह तो सत्य ही है कि यदि कोई ईसाई गो बध चाहता है तो वह न केवल राष्ट्र हित के विरुद्ध है किन्तु उस के अपने मत के आचार्य के भी विरुद्ध है अतः उसकी बात पर भारत सरकार को ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है।

६—मुसलमान सम्प्रदायः—जिन का बहाना लेकर वास्तव में अपना अर्थ सिद्ध करने को अंग्रेज भारत में गोबध कराते रहे और जिन की झूँठी आड़ लेकर आज भी गोबध बन्द नहीं किया जाता उस मत के प्रवर्तक हजरत मुहम्मद साहब हदीस में कहते हैं "ऐ मुसलमानों गाय का मांस रोग का कारण है, परन्तु उसका दूध तुम्हारे लिए दवा है" मुहम्मद साहब ने स्वयं कभी गाय का मांस नहीं खाया (देखो उन का जीवन चरित्र) हजरत इब्न सऊद कहते हैं, "गाय का मांस बीमारी, दूध दवा और घी रसायन है" हकीम अजमल खां का कहना है "न कुरान न हीं अरब का रिवाज गाय को कुर्बानी की ताईद करता है।"

डाक्टर गुलाम जीलानी साहब जो अंग्रेजी समय में सरकारी बड़े पदों पर रहे हैं और डाक्टरी की कई पुस्तकों के लेखक हैं, लिखते हैं "गाय का दूध दवा और गोश्त बीमारी है (देखो मखज़न हिकमत पृष्ठ २४३) इस का वैज्ञानिक प्रभाव इस प्रकार है रद्दी उल कैमूस और ग़लीज, नफ़ाक़ और देर हज्म, खून फ़ासिद और इमराज़ सौदावी पैदा करे (देखो इसी पुस्तक का पृष्ठ २६५)

८—सिक्ख मतः—अंग्रेजी नीति से प्रभावित भ्रम वश यद्यपि कुछ सिक्ख अपने को हिन्दुओं से प्रथक मानते हैं पर गौरक्षा के विषय में सब ही सिक्ख एक मत हैं और जब कभी गौरक्षा का प्रश्न उठता है सिक्खों का बच्चा २ गो रक्षा में अपना सिर तक कटाने को उद्यत देखा जाता है।

६—धर्म विरोधी मत :—कुछ लोग धर्म और सम्प्रदाय का अन्तर न समझ अपने को हिन्दू कहने से इनकार करते हैं और अपना आजाद मजहब मान पाश्चात्य देशों की नक़ल करना ठीक समझते हैं। उन को इस पुस्तक के २,३ व ४ मंडल पढ़कर अवश्य ही यह मानना पड़ेगा कि वास्तव में गाय राष्ट्र उत्थान की कुंजी है अत: उन का मत भी गौरक्षा के अनुकूल होगा। महात्मा गान्धी के सच्चे अनुयायी सबही कांग्रेसी गौ रक्षा के पक्ष में हैं। भारत का विधान सरकार को बाध्य करता है कि राष्ट्र हित के लिए गाय की रक्षा की जावे। फिर गौरक्षा के प्रश्न को साम्प्रदायिक कैसे कहा जा सकता है! यह तो पूर्ण राष्ट्रीय है।

मण्डल ७

रामराज्य और हमारी सरकार

रामायण और भारत सरकार के मंत्री के आधार पर

महात्मा गान्धी भारत में राम राज्य की स्थापना के इच्छुक थे। अंग्रेजी राज्य को वह नौकरशाही या शैतानी गवर्मेन्ट के नाम से पुकारते थे क्योंकि वह जनता का खून चूसती थी। ऋषि दयानन्द जी महाराज देश में वैदिक स्वराज्य के इच्छुक थे जिस की रूपरेखा राम राज्य में पाई जाती है। वह राम राज्य क्या और कैसा था उसका वर्णन गुसाईं तुलसी दास जी के शब्दों में इस प्रकार है :—

दैहिक. दैविक भौतिक तापा। रामराज नहिं काहुहि व्यापा॥
सब नर करैं परस्पर प्रीती। चलैं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥
अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा। सब सुन्दर सब विरुज सरीरा॥
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोऊ अबगुन लच्छन हीना॥
चारिऊ चरन धर्म जग माहीं। पूरि रहा सपनेहु अघ नाहीं॥
वरनाश्रम निज-निज धरम निरत वेद पथ लोग।
चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहिं भय सोक न रोग॥

इस स्थान पर जहां राम राज्य के गुण वर्णन किए हैं वहां उनका कारण भी बता दिया है। गुण तो यह हैं कि राम राज्य में किसी प्राणी को किसी प्रकार का कष्ट नहीं था। सब लोग आपस में बड़े प्रेम भाव से रहते थे। न कोई दीन और दुखी था न रोगी न थोड़ी आयु में मरने वाला। किन्तु सब ही हृष्ट पुष्ट और सुन्दर शरीर वाले थे तथा किसी में कोई भी दुर्गुण नहीं था और इसका कारण यह बताया है कि सब ही लोग वेद के अनुसार अपने २ वर्ण और आश्रम धर्म का पालन करते हुए पूर्ण धार्मिक जीवन व्यतीत करते थे। इसीलिए सुखी थे। महात्मा गान्धी का उद्देश्य ऐसे ही स्वराज्य की प्राप्ति था। अब आज हमारी वर्तमान सरकार की जो महात्मा जी को स्वराज्य दाता और अपना पथ-प्रदर्शक मानती है क्या अवस्था है उस पर मैं स्वयं अपनी ओर से कुछ न लिख कर प्रथम भारत सरकार के आयोजन मंत्री श्री नन्दा जी के शब्दों में बताता हूँ जो उन्होंने भारत साधु समाज में अभी अप्रैल सन् ५६ ई० में कहे हैं:—देश में भ्रष्टाचार काफी बढ़ा हुआ है और रिश्वत से काफी नुकसान हो रहा है। देश के लोगों को सरकार का विश्वास नहीं होता। जिस देश में विश्वास उठ जाए उस देश के लोगों से आप कोई बड़ा त्याग नहीं करा सकते" और कहा "अब लोग खुले आम शराब पीने लगे हैं। औरतें भी पीती हैं। किन्तु अभी कम। जब औरतों में यह दुर्गुण बढ़ जायगा तो देश का सर्वनाश ही हो जायगा।" और भी कहा है "आज भी देश में न जाने कितने लोग हैं जो केवल एक वक्त खाना खाकर निर्वाह करते हैं।" (देखो भारत साधु समाज के प्रथम अधिवेशन का कार्य विवरण) वास्तव में श्री नन्दा जी ने थोड़े शब्दों में इस समय की अवस्था का चित्र खींच दिया है। सब ही अनुभव करते हैं कि इस समय के भ्रष्टाचार, चोर बाज़ारी, रिश्वत लूट खसोट और चरित्रहीनता ने ईस्ट इंडिया कम्पनी के राज्य की याद को ताज़ा कर दिया है।

और मंहगाई, भुखमरी, बेकारी, कर वृद्धि और क़ानूनी-बन्धन तथा अधिकारियों के व्यवहार से लोग त्राहि-त्राहि कर उठे हैं। सब से बड़ा दुःख इस बात का है कि यह सब ही दुर्गुण हमारे नेताओं के लाख यत्न करने पर भी बराबर बढ़ते ही जा रहे हैं जिसका स्पष्ट अर्थ यह है कि हमारे यत्न में कोई भारी कमी है। इस पर मुझे अपनी ओर से विवाद करने की यहां आवश्यकता इसलिए नहीं रही कि श्री नन्दा जी ने स्वयं अपने भाषण में तथा अन्य माननीय नेताओं ने उन ही सत्य सिद्धान्तों का अपने शब्दों में उल्लेख किया है जिन की आवश्यकता मैं बहुत समय से अनुभव कर रहा था। पाठकों की जानकारी के लिए अपने नेताओं के शब्द यहां उसी साधु समाज के विवरण से लिखता हूँ। श्री नन्दा जी ने कहा "आज हमारे देश के सामने तीन मुख्य समस्याएं हैं—

१—देश के लोगों को खाने रहने तथा कपड़े की आवश्यकता।

२—देश में धर्म, नीति तथा जीवन का आध्यात्मिक रूप।

३—जिस समाज में हम रहते हैं वह समाज स्वतन्त्र हो उसकी रक्षा हमारा कर्त्तव्य है।

हमें इन तीनों का समन्वय करना है। आजकल प्राथमिक आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास हो रहा है और कई बातों में हम आगे भी बढ़ रहे हैं। किन्तु फिर भी हम कुछ बातों में पीछे हैं।" जिसके लिए श्री नन्दा जी ने साधुओं से अपने आत्म-बल बढ़ाने की उचित अपील की है। फिर एक स्थान पर अपने विचार प्रगट करते हुए श्री नन्दा जी ने यह शब्द कहे हैं:—"पैसे में सच्चा सुख और शांति नहीं मिलती, पैसे वालों को भी जाने कितनी चिन्ताएँ लगी रहती हैं। इसलिए सबसे अच्छा सुख उस व्यक्ति को होता है जो धार्मिक होता है तथा भगवान पर विश्वास करते हुए समाज कल्याण का कार्य करता है।" इससे ज्ञात होता है कि श्री नन्दा जी अपनी भारतीय प्राचीन वैदिक

संस्कृति से प्रभावित हैं। वास्तव में हम अपनी प्राचीन संस्कृति के द्वारा ही सुख और शांति प्राप्त कर सकते हैं जिसमें अभ्युदय और निश्रेयस् दोनों प्राप्त होते हैं। हमारे राष्ट्रपति के विचार और भी महत्व के इस प्रकार हैं :—

"भारत में साधुओं का जनता पर विशेष प्रभाव है पर लोग अधिक भौतिकवादी होते जा रहे हैं इसलिए उन के बीच सुखी एवं सन्तोषी जीवन के लिए अध्यात्मवाद का संदेश फैलाना चाहिए। यदि जनता के दैनिक जीवन में अध्यात्मवाद तथा भौतिकवाद का सम्मिश्रण किया जा सके तो भारत शांति और सुख के वांछित लक्ष्य की ओर स्वयं बढ़ सकता है और विश्व का नेतृत्व कर सकता है।"

यह हमारा सौभाग्य है कि श्री डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी तथा श्री नन्दा जी जैसे विचार के लोग भी हमारी सरकार में विद्यमान हैं जो धन के साथ देश में धर्म और आध्यात्मिकता को भी आवश्यक समझते हैं। ऐसे सब ही नेताओं से विशेष रूप से तथा उन सभी नेताओं से जो राष्ट्रहित की नवीन २ योजनाएं बना कर देश को ऊपर उठाना चाहते हैं निवेदन है कि वह इस पुस्तक को आदि से अंत तक पढ़ने के पश्चात निष्पक्षभाव से विचार करें कि गौ जैसे उपकारी पशु की इस समय राष्ट्र को कितनी आवश्यकता है। भारत की प्राचीन उन्नति का कारण यही गाय थी। यह मैं ही नहीं कहता इतिहास भी इसकी पुष्टि करता है और अमरीका के डाक्टर वैकफील्ड भी खोज के पश्चात इसी परिणाम पर पहुँचे हैं जैसा कि इस पुस्तक में उल्लिखित है। हमारे इस प्राचीन आचरण से शिक्षा लेकर आज अमरीका आदि देशों ने गो सेवा द्वारा अपने यहां इतना गो दुग्ध बढ़ा लिया है कि इन देशों में प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में प्रति दिन निम्न लिखित दूध पड़ता है (१) अमेरिका में ३६ औंस (२) डेन्मार्क में ४० औंस (३) ब्रिटेन

में ४१ औंस (४) आस्ट्रेलिया में ४४ औंस (५) कनाडा में ५७ औंस और जिस देश के प्राचीन आचरण से यह शिक्षा ग्रहण की गई है अर्थात भारत में आजकल प्रत्येक व्यक्ति के हिस्से में केवल ५ औंस दूध प्रतिदिन पड़ता है वह भी प्रायः भैंस का गाय का तो एक औंस भी कठिनता से मिलता होगा। यह आँकड़े मैं अपने माननीय राष्ट्रपति के भाषण के आधार पर लिख रहा हूँ। अतः इन की सत्यता पर कोई शंका नहीं की जा सकती। अभी कुछ ही वर्ष पूर्व अंग्रेजी शासन काल में उस समय की गवर्नमेन्ट आफ इंडिया के कैटल युटिलिजेशन के एडवाइज़र ने ७ औंस प्रति व्यक्ति के हिसाब से दूध की उपज बनाई थी फिर भी दूध की कमी के कारण उस समय नगरों में एक हजार में ६६६ बालक एक वर्ष के भीतर ही मर जाते थे। थोड़े ही वर्षों में २ औंस दूध और कम होगया युक्ति, प्रमाण, अनुभव, विद्वान सब ही इस पक्ष में हैं कि हमारा देश उस समय तक नहीं उठ सकता जब तक देश में प्राचीन समय की भांति गोदुग्ध का बाहुल्य नहीं होगा। देश की बहु-संख्यक जनता भी इसी कारण गौ रक्षा के लिए व्याकुल है क्योंकि कई बार करोड़ों प्रतिष्ठित नागरिकों के हस्ताक्षर से सरकार को प्रार्थनापत्र दिये जा चुके हैं। स्वयं भारत सरकार के मंत्री श्री किदवाई साहब ने अपने एक भाषण में कहा था "गोवध को रोकने के लिए कानून बनाने का प्रश्न अब इस अवस्था पर पहुँच गया है कि टाला नहीं जा सकता। जब बहु संख्यक जनता की मांग गोवध-निषेध कानून बनाने की है तो कानून बना देना चाहिए क्योंकि भारत जन-तंत्र राज्य है। और जब देश की दौलत गोधन की रक्षा की जावे तो उसके वंश-सुधार का प्रबन्ध करना भी अनिवार्य है। और यदि जनता ढंट पशुओं को पालने में असमर्थ है तो सरकार का कर्तव्य है कि वह उनके लिए पिंजरापोल की तरह कोई संस्था खोल कर उन का पालन पोषण करें।" साधू विनोवा भावे ने यहां

तक कहा है "स्वतंत्र भारत में गऊ हत्या नहीं चल सकती है। यदि गऊ हत्या जारी रही तो देश में विद्रोह हो जावेगा"

इन सब बातों से यही सिद्ध होता है कि गाय ही हमारे राष्ट्र-उत्थान की कुंजी है। देश में गोधन और कृषि की उन्नति के विचार से इस युग के सब से बड़े सुधारक ऋषि दयानन्द जी महाराज ने गोकरुणानिधिः पुस्तक में ऐसी सुन्दर स्कीम बताई है जिसके द्वारा बिना किसी विघ्न-बाधा के गोधन देश में बढ़ सकता है। यदि सरकार उसे अपनावे तो शीघ्र ही देश धन धान्य से पूर्ण हो सकता है। इस समय सरकार को यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि अवैदिक सभ्यता के प्रचार के कारण सर्वदा ही युद्ध के बादल मंडराते रहते हैं। ईश्वर न करे कभी वह बरस पड़ें तो बाहर का अन्न, ट्रेक्टर इत्यादि भारत की भूखी जनता का पेट न भर सकेंगे। इस समय जो गोधन बढ़ा लिया जावेगा वह हमारे प्राण और स्वास्थ्य दोनों की रक्षा कर सकेगा और हमें ठीक सोचने की शक्ति भी प्रदान करेगा। इस लिए नन्दा जी सरीखे मंत्री महानुभावों को भारत सरकार का ध्यान इस ओर दिलाकर तुरन्त गोवध निषेध कानून की घोषणा के साथ प्रत्येक नगर व ग्राम में गोकृषि-रक्षिणी सभा के अधीन विशाल गऊ शालाओं की स्थापना कराना चाहिए।

नोट :--गोकरुणानिधिः पुस्तक -) प्रति में सार्वदेशिक सभा देहली से मिल सकती है; अथवा हमारे यहाँ से मंगा लें। जो सज्जन इस राष्ट्र उत्थान के पुनीत कार्य को करना चाहते हों और उनकी समझ में उस का मार्ग न आता हो, मैं उनकी सेवा कर सकता हूँ।

परिशिष्ट १

इससे भी अधिक आवश्यक और तुरन्त ही ध्यान देने योग्य बात पशुओं के भोजन व्यवस्था की है। इस विषय में अंग्रेजों के समय सम्राट की ओर से एक कमीशन कृषि के सम्बन्ध में बैठा था जिस ने सं० १९२८ ई० में अपनी रिपोर्ट में लिखा था :—

"पशुओं की रक्षा के सम्बन्ध में सब से आवश्यक बात है उनके भोजन की व्यवस्था। भारत में जहाँ कि पशुओं को बाँध कर खिलाने की प्रथा नहीं सी है चराने की सुविधाओं पर ही मुख्यरूप से विचार करना चाहिये......पशुओं की उन्नति के लिए मुख्यतया दो बातों पर ध्यान देना आवश्यक है खुराक और नस्ल। इनमें भी हम खुराक को प्रथम स्थान देते हैं क्योंकि जब तक पशुओं को अच्छी तरह खिलाया पिलाया नहीं जायगा; तब तक सन्तानोत्पादन के तरीके में कोई विशेष सुधार नहीं हो सकता।" यह याद रखना चाहिये कि कमीशन के सामने बयान देनेवालों में से अधिकांश ने गोचर भूमियों को बढ़ाने की सम्मति दी थी। पर शोक है कि इस विषय में हमारा आचरण उल्टा ही होता रहा है। यह मैं ही नहीं कहता सरकारी अधिकारी स्वयं स्वीकार करते हैं। मुक्तेसर में स्थित पशु चिकित्सा सम्बन्धी राजकीय अनुसन्धानशाला के डाइरेक्टर श्रीयुत एफ० वेयर अपनी रिपोर्ट में जो उन्होंने बोर्ड आफ एग्रिकल्चर ऐंड ऐनिमल हसबैंड्री की पशु प्रबंध शाखा की द्वितीय वार्षिक बैठक में उपस्थित की थी लिखा है "शाही कमीशन की सन् १६२८ ई० की रिपोर्ट निकलने के बाद उस रिपोर्ट में विचारित कई बातों में उन्नति हुई है। किन्तु गोचरण ही एक ऐसा विषय है, जिस के सम्बन्ध में यह बात लागू नहीं होती।" अर्थात इस में उन्नति नहीं हुई। अब हमारी अपनी सरकार १० वर्ष से है। इस के प्रबन्ध काल में पशुओं के चारे और चरागाह की जो सुविधा मिल रही है उस को वही लोग भली प्रकार अनुभव कर रहे हैं जो महान कष्ट उठाने पर भी पशु पालन का कार्य कर रहे हैं। अतः लोकसभा और विधान सभा इत्यादि के सभी सदस्यों का कर्तव्य है कि वह राष्ट्र के इस सब से अधिक उपयोगी कार्य की ओर ध्यान देकर ऐसे कानून बनवावें जिस से दूध के पशुओं को विशेष रूप से गायों को पालने वालों को अधिक से अधिक सुविधा हो। कुछ लोग सफाई के

नियमों के नाम पर गऊ से घृणा करते हुए निवास स्थानों में गऊ रखने का विरोध करते हैं। पर वतौर डाक्टर के हम यह वात कहने को तय्यार हैं कि बहुत अच्छा है कि हर गृहस्थी के यहां गऊ शाला प्रथक हो। ऐसा सम्भव न होने पर दूध घी न खाने अथवा बनावटी खाने की अपेक्षा गाय को अपने सोने के कमरे में बांध कर उसका घी दूध खाना स्वास्थ्य की दृष्टि से अधिक हित-कर होगा। गाय के गोबर और मूत्र की गँध से रोग कृमि मरते हैं; इसे ध्यान में रखना चाहिए। कुछ नगरपालिका सभाओं ने गौ पालन पर टैक्स लगा रक्खे हैं। राष्ट्र हितैषी सब ही सदस्यों को ऐसे लज्जास्पद कानून तुरन्त रद्द करा देना चाहिये और अपनी सभाओं की ओर से चारा व चरागाह बढ़ाने का प्रवन्ध करना चाहिये। साथ ही

जनता का कर्तव्य

है कि वह सरकार द्वारा होने वाले इन सुधारों की प्रतीक्षा में हाथ पर हाथ रख कर न बैठ जावे। इन कामों के लिए आन्दोलन भी करे। अपने चुने सरकारी सभाओं के सदस्यों पर दबाव डाले कि वह सरकार द्वारा उपरोक्त कार्यों के करवाने का बड़े वेग से शीघ्र से शीघ्र घोर प्रयत्न करें। साथ ही हर गृहस्थी का कर्तव्य है कि वह स्वयं अपनी शक्ति भर अधिक से अधिक गाय अपने घर सुख-पूर्वक रक्खे; तथा गोकरुणानिधि के अनुसार अपने २ क्षेत्र में सभा बना कर गऊ रक्षा का कार्य प्रभावशाली ढंग पर करें; और गऊशालाऐं खोल कर अपने क्षेत्र में ऐसे सस्ते दामों पर दूध वितरण का प्रबन्ध करें कि सब ही लोग गो दुग्ध का सेवन कर सकें। यदि ऐसा न किया गया तो याद रक्खें राष्ट्र की किसी प्रकार की भी उन्नति कठिन ही नहीं असम्भव है। उन्नति तो दूर की चीज़ रही हमें देश में बढ़ते हुये क्षय रोग से बचना ही कठिन हो जावेगा जो इस वेग से बढ़ रहा है कि सं १६३० ई० में मैंने

क्षय निवारक समिति लखनऊ की एक रिपोर्ट में पढ़ा था कि डाक्टरों का लखनऊ नगर में ४०,००० क्षय रोगी होने का अनुमान है। क्षय रोकने के सरकारी प्रयत्न होने पर भी २६-१०-४५ के अमृत बाजार पत्रिका में हम डाक्टर ए० जी० फ़रीदी की खोज पढ़ते हैं कि लखनऊ में ७१·६ प्रतिशत अर्थात कई लाख व्यक्ति क्षय रोग के प्रभाव में आ चुके हैं। कानपुर की अवस्था इस रोग के विषय में लखनऊ से भी ख़राब है। अब वर्तमान भारत सरकार के क्षय परामर्श दाता डा० बैंजमिन साहब ने पिछले दिनों अपने भाषण में बताया है कि B.C.G. के लिए १५ वर्ष तक की आयु के ६ लाख युवकों की जांच करने पर ज्ञात हुआ है कि ग्रामों में ५०% तथा नगरों में ६२% व्यक्ति क्षय रोग से प्रभावित हो चुके हैं। इन सब बातों से सिद्ध होता है कि क्षय रोकने के लिए अब तक के हमारे सब प्रयत्न असफल रहे हैं क्योंकि यह रोग के मूल कारण को दूर नहीं करते। डाक्टर मोलर साहब ने जो अंग्रेजों के समय अखिल भारतीय क्षय निवारक सभा के कमिश्नर थे, पटना में भाषण देते हुये बताया था कि भारत में क्षय-रोग बढ़ने का कारण पौष्टिक भोजन (दूध, घी, मलाई, मक्खन) की कमी है। अतः यदि हम अपने बच्चों के स्वास्थ्य तथा धन को बढ़ा कर अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहते हैं तो तुरन्त ही राष्ट्र उत्थान की कुंजी गौधन और उसके अमृत गो दुग्ध को बढ़ाना चाहिये।

गाय के दूध बढ़ाने के उपाय—जो सज्जन गो वंश सुधार और उस का दूध बढ़ाना चाहते हैं उन के लिए नीचे कुछ सुगम उपाय लिखे जाते हैं :-

१—सर्वदा अच्छे वंश और स्वस्थ सांड से गऊ को मिलाना चाहिये।

२—गाय वियाने पर कम से कम एक मास उस के बच्चे को भर

ेट दूध पिलाने के पश्चात् शेष दूध गेहूँ के दलिया अथवा उपयुक्त न्न के साथ गाय को ही पिला देना चाहिए।

—प्रति दिन हरी और ताजी घास गाय को भर पेट देना चाहिये।

परोक्त अनिवार्य नियमों के अतिरिक्त निम्न लिखित साधनों से भी ाय का दूध बढ़ता है।

—तीन भाग जौ एक भाग गुड़ पका कर नित्य खिलाना।

—फूल गोभी तथा पत्ता गोभी के पत्ते खिलाना।

—पपीते के कच्चे फल और पत्ते गुड़ मिलाकर खिलाना।

—गन्ने का रस निकाल कर उसकी खोई खिलाना।

—सन के फूल, महुआ के फूल, घास और गुड़ जल में उबाल र खिलाना।

—अलसी की खल और उबाली हुई मटर खिलाना।

—गुड़ और कांजी मिलाकर खिलाना।

—घी, मैदा, और गुड़ मिलाकर पका कर खिलाना।

—बीज वाले केलों को चावल मिलाकर उबाल कर खिलाना।

०—पके व कच्चे बेल को उबाल कर खिलाना।

१—गुंवार को पका कर या रात भर पानी में भिगोकर खिलाना।

२—पलास (ढाक-टेसू) के तथा सेमल के फूल खिलाना।

३—गिलोय की पत्ती तथा उस की बेल खिलाना।

४—प्रसव के तीसरे दिन उड़द का दलिया आध सेर, नमक १ टांक, हल्दी आधी छटांक, और पीपल का चूर्ण एक छटांक,- इन ब चीजों को मिलाकर पानी में पका लेना चाहिये फिर उस में व भर गुड़ मिलाकर कुछ गरम गरम ही सायंकाल को खिलाना ाहिये।

५—बाँस की पत्ती आधी छटांक उबाल कर उस में दो तोला जवायन और पाव भर गुड़ मिला कर खिलाना चाहिये।

६—जीरा १० छटांक, नमक १० छटांक, सौंफ १० छटांक, लौंग

५ छटांक, चन्दन सफेद २ छटांक, फिटकरी १ छटांक, नाइट्रेट आफ् पोटाशियम (अंग्रेजी दवा) इन सब चीजों को कूट कर रख लें। और प्रातः सांय एक २ मुट्ठी दाने या सानी में मिलाकर खिलावें।

१७--गाय के दूध बढ़ाने का यह तरीका बहुत उत्तम है कि ऐसे सांड से मिलाया जाए जिस की मां अधिक दूध देने वाली हो। इति

(—ः—)

लेखक की अन्य पुस्तकें

(१) आरोग्य शास्त्र—इसमें स्वास्थ्य के वह अचूक प्राकृतिक नियम बताये गये हैं जिन पर चलकर मनुष्य सर्वदा निरोग रह सकता है। मू० २)

(२) यज्ञ चिकित्सा—लेखक ने अपने जीवन का बड़ा भाग खोज में लगाकर तपेदिक (T.B.) की जो अचूक चिकित्सा की खोज यज्ञ द्वारा की है और जिसका परिणाम सेनेटोरियम में ८०% रहा है उस की पूर्ण विधि तथा रोग का निदान व बचने के उपाय सब ही बातें विस्तार से बताई हैं। पुस्तक पढ़कर हर व्यक्ति चिकित्सा स्वयं कर सकता है। मू० ५)

(३) आयुर्वेदिक प्राकृतिक चिकित्सा—इसे पढ़ कर हर रोग की प्राकृतिक चिकित्सा की जा सकती है। स्व० श्री मावलंकर जी अध्यक्ष लोक सभा ने इसका आमुख लिखकर चिकित्सा विधि की बड़ी प्रशंसा की है। मू० ४)

इन पुस्तकों की प्रशंसा देश के प्रसिद्ध समाचार पत्रों व विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से की है। सरकार ने पुरस्कार देकर और खरीदारी स्वीकार कर इनकी प्रतिष्ठा को बढ़ाया है।

राष्ट्र उत्थान की कुञ्जी

या

स्वर्ग की सीढ़ी

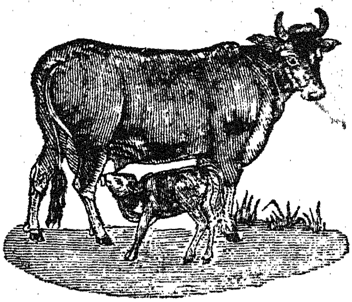

१—भारत की सुख समृद्धि गौ और उसकी संतान की समृद्धि के साथ जुड़ी हुई है। —महात्मा गांधी

२—कोई जाति बिना गऊ पालन समृद्धिशाली नहीं बन सकती। —सम्पादक "फ़िज़ीकल कलचर" अमेरिका

डाक्टर अग्निहोत्री

भूतपूर्व मेडिकल आफीसर टी. बी. सेनेटोरीयम।

गोपाल आर्ट प्रेस, बरेली।